अमृत विचार
लोक दर्पण
रविवार, 13 जुलाई 2025 www.amritvichar.com

उत्तर भारत का नया आईटी हब बनने को तैयार लखनऊ

अपनी नजाकत व नफासत के अलावा नवाबों के शहर के रूप में शुमार लखनऊ अब उत्तर भारत का नया आईटी हब बनने जा रहा है। सुल्तानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग और किसान पथ के बीच 2858 एकड़ में आईटी सिटी आकार लेती दिख रही है। इसका एक पड़ाव देश की पहली एआई सिटी बसाने को लेकर कानपुर रोड पर अमौसी के नादरगंज में औद्योगिक क्षेत्र है। यहां 40 एकड़ में सरकार का प्लान है, जबकि सैकड़ों एकड़ में निजी निवेश से विकास का एमओयू हो रहा है। लखनऊ की बदलती तस्वीर से सबसे ज्यादा उत्साहित प्रदेश की नई पीढ़ी है। युवाओं की आंखों में तमाम सपने पल रहे हैं। इस सिटी की परिकल्पना को आकार देने में जुटे सरकार और शासन को प्रमुख आईटी कंपनियों की ओर इतने निवेश प्रस्ताव आ रहे हैं कि 360 एकड़ में प्रस्तावित आईटी सिटी अब 2858 एकड़ तक विस्तार पा चुकी है। यहां ज्यादा से ज्यादा निजी निवेश के लिए 445 .65 एकड़ औद्योगिक क्षेत्र व व्यावसायिक गतिविधियों के लिए 260 एकड़ क्षेत्रफल आरक्षित किया जाएगा। इससे औद्योगिक व व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के अवसर पैदा होंगे। 200 एकड़ ग्रीन बेल्ट के बड़े भाग में गोल्फ सिटी बनाई जाएगी। 15 एकड़ में फैली वाटर बॉडी योजना को पर्यावरण के अनुकूल बनाएगी।

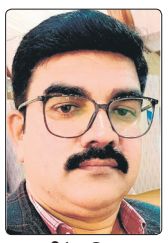

धीरेंद्र सिंह
विशेष संवाददाता, राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लखनऊ विकास प्राधिकरण की ओर से सरकार को जहां जरूरत है, उससे 10 गुना जमीनों का इंतजाम करने में कोई दिक्कत नहीं आ रही है। यूपी को दस खरब डालर की अर्थव्यवस्था बनाने में नादरगंज औद्योगिक क्षेत्र में एआई सिटी की बड़ी भूमिका होगी। यह देश की पहली एआई सिटी होगी। बजट में पांच करोड़ रुपये मिलने के बाद ढांचागत विकास शुरू हो चुका है। यहां आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी रिसर्च, स्टार्टअप और डाटा एनालिटिक्स से जुड़े काम होंगे। यह सेंटर न केवल तकनीकी विशेषज्ञों को नए अवसर देगा, बल्कि आईटी सेक्टर में प्रदेश को एक प्रमुख हब के रूप में स्थापित करने में मदद करेगा। वर्ष 2023 में नैसकॉम और डेलॉइट द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत के उभरते प्रौद्योगिकी केंद्र ने लखनऊ को उन शहरों की सूची में रखा है जो कई कारणों से तकनीकी केंद्रों की अगली लहर का नेतृत्व करेंगे और उससे लाभान्वित होंगे। इनमें कुशल लोगों की उपलब्धता, लागत, जीवन की गुणवत्ता और अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने वाले स्टार्ट-अप की संख्या में वृद्धि और सरकार से प्रोत्साहन शामिल हैं। आईटी दिग्गज भी लखनऊ में अपने उपक्रमों को लेकर उत्साहित हैं। युवाओं को लखनऊ में ही हाई-टेक जॉब्स मिलेंगी, जिससे उन्हें बड़े शहरों में पलायन करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अगले 2 सालों में लखनऊ में हाई-टेक आईटी सिटी तैयार हो जाएगी।

आईटी सिटी के प्रमुख लाभ

- स्टार्टअप और टेक्नोलॉजी कंपनियों को नया प्लेटफार्म मिलेगा।
- हजारों युवाओं को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा।
- लखनऊ को ग्लोबल आईटी हब के रूप में पहचान मिलेगी।
- इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार और डिजिटल इकॉनमी को बढ़ावा मिलेगा।
- इन बड़ी कंपनियों के आने तैयारी टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल, टेक महिंद्रा, आईबीएम और माइक्रोसाफ्ट

बेंगलुरु में लगभग 35 फीसदी तकनीकी कार्यबल यूपी से

यूपीडेस्को की प्रबंध निदेशक और आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग की विशेष सचिव नेहा जैन कहती हैं कि उत्तर भारत में एक प्रमुख आईटी हब के रूप में उभर रहा है लखनऊ। पिछले छह महीनों में कम से कम चार बड़ी आईटी कंपनियों के निवेश प्रस्ताव मिल चुके हैं। बताया कि बेंगलुरु में लगभग 35 फीसदी तकनीकी कार्यबल यूपी से ही है। जैसे-जैसे यहां प्रमुख तकनीकी कंपनियां आ रही है और ढांचा विकसित हो रहा है। वैसे-वैसे राज्य की प्रतिभाओं के साथ समूचा उत्तर-भारत से कुशल पेशेवर अपनी पहुंच भी बना रहे हैं।

ईटी सिटी में बस रहा नया लखनऊ

सुल्तानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग व किसान पथ के बीच 2858 एकड़ में आईटी सिटी बसने का काम शुरू हो गया है। इसके लिए मोहनलालगंज तहसील के ग्राम-बक्कास, सोनई कंजेहरा, सिकंदरपुर अमोलिया, सिद्धपुरा, परेहटा, पहाड़नगर टिकरिया, रकीबाबाद, मोहारी खुर्द, खुजौली और भटवारा की जमीन ली जा रही है। योजना में 72 से 200 वर्गमीटर के पांच हजार आवासीय भूखंडों के अलावा ग्रुप हाउसिंग के बड़े भूखंड भी मिलेंगे। इसका विस्तार से नया लखनऊ बसता दिख रहा है।

डेलोइट इंडिया ने कौशल विकास को बनाया मुहिम

डेलॉइट साउथ एशिया के सीईओ रोमल शेट्टी कहते हैं कि लखनऊ संभावनाओं से भरा हुआ है। यहां विस्तार करने का हमारा निर्णय क्षेत्र की क्षमता में हमारे विश्वास और राज्य के आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन में सार्थक योगदान देने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। वे कहते हैं कि अपने शुरुआती चरण में, इस प्रतिष्ठान से 800-1,000 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होने की उम्मीद है। अगले पांच वर्षों में और बढ़ाने की योजना है। डेलोइट इंडिया कौशल विकास कार्यक्रमों और इंटर्नशिप के माध्यम से रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए स्थानीय शैक्षणिक संस्थानों और प्रशिक्षण केंद्रों के साथ सहयोग करेगी, जिससे उद्योग के लिए तैयार प्रतिभाओं की एक पाइपलाइन तैयार होगी।

आईटी दिग्गजों के आगमन का होगा व्यापक प्रभाव

जेनपैक्ट के सीएचआरओ और कंट्री मैनेजर इंडिया पीयूष मेहता कहते हैं कि लखनऊ उनकी कंपनी के लिए एक रणनीतिक बाजार है। हमारा ध्यान केवल शहर में अपनी उपस्थिति बनाने पर नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए तैयार कौशल में करियर विकास और अपस्किलिंग के लिए पहुंच खोलकर दीर्घकालिक प्रभाव पैदा करने पर है। इससे हमें न केवल वैश्विक ग्राहकों के लिए स्थायी प्रभाव डालने में मदद मिलेगी, बल्कि भारत के तेजी से विकसित हो रहे आर्थिक परिदृश्य में भी योगदान मिलेगा। सरकार आईटी दिग्गजों के आगमन के व्यापक प्रभाव को भी देख रही है।

बड़ी कंपनियों के आने से बढ़ेंगे नौकरियों के अवसर

श्रम और रोजगार विभाग के प्रमुख सचिव एमके शनमुगा सुंदरम कहते हैं कि शहर में बड़ी कंपनियों के आने से नौकरियां पैदा होंगी। सरकार द्वारा आईटी क्षेत्र से अधिक खिलाड़ियों को आकर्षित करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। लखनऊ को एआई सिटी बनाने के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के संकल्प से राजधानी में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। एआई सिटी की परिकल्पना एआई, मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स पर ध्यान केंद्रित करने वाली तकनीकी फर्मों, स्टार्ट-अप और शोध संस्थानों को आकर्षित करने के लिए की गई है।

इसलिए चुना गया लखनऊ

एआई सिटी के लिए लखनऊ को इसलिए चुना गया है, क्योंकि यहां 800 से ज्यादा तकनीक से संबंधित व्यवसाय और 200 से ज्यादा टेक स्टार्टअप हैं। शहर में एआई और मेडिकल टेक जैसे क्षेत्रों में एक्सीलेंस सेंटर्स भी हैं। लखनऊ में उद्यमिता को प्रोत्साहन देने वाले 15 से ज्यादा स्टार्टअप हैं। एचसीएल और टीसीएस जैसी कंपनियां हैं। लखनऊ 82.5 फीसद वयस्क साक्षरता के साथ कौशल हैं। लखनऊ में 75,000 से अधिक टेक्निकल प्रोफेशनल्स हैं। मौजूदा ऑफिस किराया टियर 1 शहरों की तुलना में 40- 50 प्रतिशत कम है। शहर में नियोजित मेट्रो लाइनें हैं जो प्रमुख केंद्रों को जोड़ती हैं। लखनऊ से दिल्ली, बैंगलोर, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे प्रमुख शहरों के लिए 60 से ज्यादा फ्लाइट्स आती-जाती हैं।

1000 करोड़ टर्नओवर वाली कंपनियों को मौका

आईटी सिटी में परियोजना पर काम करने वाले रियल एस्टेट डेवलपर का सालाना टर्न ओवर 1000 करोड़ रुपये से अधिक होना चाहिए। ये प्लग-एंड-प्ले इंफ्रास्ट्रक्चर पर आधारित ऑफिस वाले टावर का निर्माण करेंगे। किफायती आवासीय योजना के साथ रिक्रिएशनल एरिया, कमर्शियल एरिया व ग्रीन पार्क भी होंगे। यहां एआई टेस्टिंग और प्रोटोटाइप फैसिलिटीज के लिए समर्पित क्षेत्र होगा, जो रिसर्च सेंटर्स और टॉप टेक्नोलॉजिकल एजुकेशनल इंस्टिट्यूट्स के लिए जगह देगा।

विकासकर्ताओं को 100 करोड़ तक की मदद

एआई सिटी प्रोजेक्ट के लिए नोडल एजेंसी यूपी इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड है। इसमें अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, अनुसंधान केंद्रों और शैक्षणिक संस्थानों को एकीकृत करके शहर का निर्माण किया जाएगा। प्रोजेक्ट के लिए डेवलपर कंपनियों को नादरगंज औद्योगिक क्षेत्र के प्रमुख स्थान पर 40 एकड़ जमीन दी जाएगी। डेवलपरों को आईटी पार्क के लिए 20 करोड़ रुपये और आईटी सिटी के लिए 100 करोड़ रुपये तक की मदद की जाएगी।

सिफी टेक्नोलॉजीज 200 एकड़ में बनाएगी डाटा सेंटर

सिफी टेक्नोलॉजीज लखनऊ के चकगजरिया क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) हब स्थापित करने के लिए 1000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। सिफी टेक्नोलॉजीज ने 150-200 एकड़ जमीन पर हाईपर स्केलर डाटा सेंटर स्थापित करने की संभावनाएं भी जताई है। ये योजना 7000 करोड़ रुपये के निवेश से नोएडा में स्थापित हो रहे 75 मेगावाट डाटा सेंटर के बाद दूसरी योजना होगी। नादरगंज औद्योगिक क्षेत्र में स्थित जमीन लखनऊ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से लगभग 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहां सभी शहरों के लिए अच्छी कनेक्टिविटी है।

एआई प्रोडक्ट बनेंगे, स्टार्टअप भी शुरू होंगे

ट्रिपलआईटी लखनऊ के निदेशक प्रो. अरुण मोहन शेरी कहते हैं कि प्रदेश में एआई सिटी अपने तरह का विश्व का यूनिक सेंटर होगा। यह विकसित भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। इस एआई सिटी में देश-विदेश की नामी कंपनियां आएंगी। यहां पर एआई से जुड़े प्रोडक्ट बनेंगे। एआई आधारित स्टार्टअप का विकास किया जाएगा। शहरों के विकास में परिवहन, स्वास्थ्य सुविधाओं आदि में भी एआई का तेजी से प्रयोग बढ़ा है। एआई सिटी में इनसे जुड़ी चीजों व तकनीकी का विकास किया जाएगा। प्रो. शेरी ने कहा कि एआई तकनीकी का विकास होने से हमें भूकंप आने, बरसात होने आदि से जुड़ी जानकारी भी पहले से मिल जाएगी।

आईटी हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर उत्पादन में आएगा उछाल

फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया आईटी फेडरेशन के अध्यक्ष देवेश रस्तोगी का कहना है कि लखनऊ में एआई सिटी की स्थापना से स्टार्टअप, टेक उद्यम, शोध संस्थानों का विकास होगा। एआई सिटी से प्रदेश में घरेलू और वैश्विक निवेश भी आकर्षित होगा। तकनीक उत्पादन के क्षेत्र में देश की आत्मनिर्भरता को भी मजबूती मिलेगी। एफएआईआईटीए सरकार के साथ साझा सहयोग के लिए हमेशा तैयार है।

लैंड पूलिंग से किसानों को कई गुना फायदा

संयुक्त सचिव सुशील प्रताप सिंह कहते हैं कि लैंड पूलिंग से योजना के लिए जमीन देने वाले किसानों को कई गुना लाभ होगा। जैसे मोहारी खुर्द गांव में जमीन का डीएम सर्किल रेट करीब आठ लाख रुपये बीघा है। ऐसे में प्रतिकर के रूप में चार गुना मुआवजा दिए जाने पर भी किसान को 32 लाख रुपये ही मिलते। लैंड पूलिंग नीति में शतप्रतिशत भूमि निशुल्क देने वाले किसान को योजना में 25 प्रतिशत विकसित आवासीय भूमि दी जाएगी। एक बीघा में करीब 6800 वर्गफुट विकसित जमीन किसान को मिलेगी। इसकी कीमत तीन करोड़ रुपये से अधिक होगी।

वेलनेस सिटी योजना में भूमि देने को आगे आएं

एलडीए के उपाध्यक्ष प्रथमेश के मुताबिक इसी क्षेत्र में वेलनेस सिटी योजना में आने वाले ग्राम-दुलारमऊ में जमीन का डीएम सर्किल रेट लगभग 15.75 लाख रुपये प्रति बीघा है। यहां जमीन को नियमानुसार लगभग 63 लाख रुपये मुआवजा मिलेगा। जबकि लैंड पूलिंग के तहत भूमि देने पर लगभग पांच गुना अधिक लाभ होगा। लैंड पूलिंग नीति के तहत भूमि देने वाले किसानों से सरल व पारदर्शी प्रक्रिया के तहत पक्का करार किया जा रहा है। जिसके तहत जमीन मालिक व प्राधिकरण के मध्य रजिस्टर्ड एग्रीमेंट किया जा रहा है। दोनों योजनाओं के लिए लगभग 350 बीघा भूमि के आवेदन लैंड पूलिंग के माध्यम से प्राप्त हो चुके हैं।

एलडीए की आईटी सिटी योजना दीपावली पर होगी लांच

एलडीए वीसी प्रथमेश कुमार ने बताया कि सुल्तानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग व किसान पथ के बीच 2858 एकड़ में आईटी सिटी बसेगी। आईटी सिटी योजना में 72 वर्गमीटर से 200 वर्गमीटर क्षेत्रफल के लगभग 5,000 आवासीय भूखंड सृजित किए जाएंगे। यह योजना दीपावली पर लांच होगी। साथ ही, लगभग 445.65 एकड़ इंडस्ट्रियल एरिया व व्यावसायिक गतिविधियों के लिए 260 एकड़ क्षेत्रफल आरक्षित किया जाएगा। वहीं, 200 एकड़ की ग्रीन बेल्ट व 15 एकड़ क्षेत्रफल में फैली वाटर बॉडी योजना को पर्यावरण के अनुकूल बनाएगी।

स्मृति दिवस

जनवादी आलोचक डॉ.चंद्रभूषण तिवारी

चंद्रेश्वर
सेवानिवृत्त प्रोफेसर,लखनऊ

जनवादी आलोचक डॉ.चंद्रभूषण तिवारी का 32 वां स्मृति दिवस बीते सप्ताह 6 जुलाई को था। उनका जन्म 15 जनवरी 1931 को हुआ था। 6 जुलाई 1993 को ब्रेन हैमरेज से अचानक उनकी मृत्यु हुई थी और उनके चाहने वाले हज़ारों लोगों, शिष्यों, समर्थकों एवं परिवारीजनों में शोक छा गया। वे आदर्श पिता, भाई,पति होने के साथ-साथ एक कुशल संगठनकर्ता, हिन्दी के सुयोग्य प्राध्यापक, प्रखर आलोचक एवं संपादक थे। पिछली शताब्दी में सन 1970 के दशक के आरंभिक वर्षों में (1971-74) उनके द्वारा संपादित साहित्यिक पत्रिका 'वाम' के तीन अंकों की उस दौर में लघुपत्रिका आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका रही है। देश स्तर पर 'जनवाद' शब्द को परिभाषित करने एवं 'जनवादी लेखक संघ' के गठन में उनकी भूमिका नेतृत्वकारी रही है। सन 1980-82 के दौरान उन्होंने कोलकाता से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिका 'कलम' के लिए 'जनवाद' के मुद्दे पर अपने समय के तीन दिग्गज प्रगतिशील आलोचकों- डॉ.रामविलास शर्मा, डॉ.चंद्रबली सिंह एवं डॉ.नामवर सिंह के लंबे-लंबे साक्षात्कार लिए थे। वे साक्षात्कार उनके मरणोपरांत प्रकाशित उनकी एकमात्र पुस्तक 'आलोचना की धार' में संकलित हैं। उसे आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा ने छापा था और उसका संपादन-संकलन किया था डॉ.शिवकुमार मिश्र ने। बहरहाल, आलोचक डॉ.चंद्रभूषण तिवारी ने सागर, मध्यप्रदेश में रहकर आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी के निर्देशन में शोधकार्य किया था। उनके शोध का विषय सौंदर्यशास्त्र से संबंधित था। वे पीएचडी करने के बाद बिहार के आरा शहर के सम्मानित और प्रसिद्ध महाविद्यालय हरप्रसाद दास जैन महाविद्यालय में हिन्दी विभाग में व्याख्याता के पद पर नियुक्त हो गए थे। वे बाद में वहीं से सन् 1991 में सेवानिवृत्त भी हुए थे। आरा शहर से उनका बहुत गहरा एवं आत्मीय लगाव था। आरा से पूरब में 10 किलोमीटर की दूरी पर पटना की तरफ़ जाने वाले मुख्य राष्ट्रीय मार्ग पर उनका गांव क़ायमनगर है। अब यह मुख्य मार्ग फोरलेन में बदल चुका है। वे कभी किसी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में जाने के लिए आवेदक नहीं बने थे। उन्होंने अपने ज़िला मुख्यालय आरा में ही जैन महाविद्यालय में पढ़ाते हुए देश भर में अपनी महत्वपूर्ण साहित्यिक पहचान हासिल की थी। आरा वैसे तो हिन्दी-भोजपुरी साहित्य का एक मज़बूत एवं लोकप्रिय केन्द्र रहा है।

19 वीं शताब्दी में हिन्दी गद्यचतुष्टय में से एक प्रमुख साहित्यिक हस्ताक्षर पंडित सदल मिश्र से लेकर हाल-हाल तक, लेकिन समकालीन हिन्दी साहित्य में डॉ.चंद्रभूषण तिवारी का नाम शीर्ष पर दिखाई देता है। सन् 1970 के दशक से लेकर सन 1990 तक के दरम्यान जो कुलजमा बीस वर्षों तक का समय है, इसमें शायद ही देश में समकालीन कविता, कहानी, आलोचना लिखने वाला नई पीढ़ी का कोई लेखक रहा हो जो उनके संपर्क में न आया हो! वे एक बहसतलब एवं प्रतिबद्ध आलोचक थे। उनके संपर्क में आने वाला हर लेखक प्रखर एवं तेजस्वी दिखाई देने लगता था। वे सही मायने में पारसमणि की तरह थे जिनके संग-साथ एवं सत्संग से लोहा भी सोना में बदल जाता था। चंद्रभूषण तिवारी एक सुखी,ख़ुशहाल एवं प्रतिष्ठित किसान परिवार में पैदा हुए थे। उनके पिता तपेश्वर तिवारी एक परिश्रमी एवं तपस्वी किसान थे। वे राम एवं हनुमान भक्त थे। वे अपने गांव-जवार के प्रसिद्ध रामायणी भी थे। उन्हें तुलसीकृत पूरा 'रामचरित मानस' कंठस्थ था। उनके दो ही सुपुत्र थे। बड़े सुपुत्र का नाम चंद्रभूषण एवं छोटे सुपुत्र का नाम चंद्रमौलि था। उनके दोनों सुपुत्र हिन्दी के प्रख्यात विद्वान एवं प्रोफ़ेसर बने थे। पंडित तपेश्वर तिवारी का विवाह पटना ज़िले के एक गांव अमहरा में पंडित रामव्यास तिवारी की पढ़ी-लिखी सुपुत्री राजरोशन से हुआ था। वे अंग्रेजी राज में इन्ट्रेन्स उत्तीर्ण थीं। पूरे परिवार में अकेले चंद्रभूषण विद्रोही स्वभाव के निकले। वे किशोरवय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े थे, परंतु पढ़ाई के सिलसिले में उनका कोलकाता जाना हुआ था। वहां जाकर शुरू में वे नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की पार्टी 'आज़ाद हिन्द फौज' से प्रभावित हुए थे। शीघ्र ही वहां से भी मोहभंग हुआ और वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संपर्क में आ गए। जब सन् 1964 में कम्युनिस्ट पार्टी विभाजित हुई तो वे सीपीआई एम के साथ आ गए थे। उनको मार्क्सवादी विचारधारा के गहरे अध्ययन के लिए आरा जैसे क़स्बाई शहर में हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान प्रोफ़ेसर डॉ.रमेश कुंतल मेघ से भी प्रेरणा मिली थी। उन दिनों मेघ जी आरा के ही महाराजा महाविद्यालय में हिन्दी के व्याख्याता थे। उनके शिक्षक जीवन की शुरुआत वहीं से हुई थी। बाद में वे पंजाब के एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष बने थे। बहरहाल,वह एक ऐसा दौर था जब ब्राह्मण परिवार में पैदा होने के बावजूद लोग सच्चे कम्युनिस्ट बनते थे। चंद्रभूषण तिवारी के जीवन से जुड़े कई ऐसे प्रसंग हैं जो उन्हें एक सच्चा इंसान एवं कम्युनिस्ट साबित करते हैं।

हमलोग उनके शिष्य ज़रूर बने, लेकिन उतने तपे-तपाए आदर्श अथवा सच्चे कम्युनिस्ट नहीं बन सके हैं। डॉ.चंद्रभूषण तिवारी से मैं जैन महाविद्यालय, आरा में विद्यार्थी जीवन में ही बहुत प्रभावित हुआ था। उनके विचार हमारे ज़ेहन में अब भी गहराई से रचे-बसे हैं। आज जबकि उनके कुछ शिष्य उनकी विचारधारा से मुंह मोड़ रहे हैं और भौतिक उपलब्धियों,पद-पुरस्कारों के लिए सत्ता के साथ नर्तन कर रहे हैं तो कुछ अब भी उनके दिखाए रास्ते पर ही संकल्पबद्ध होकर चल रहे हैं। यद्यपि उनके जैसा प्रखर, अध्येता एवं सच्चा कम्युनिस्ट होना कतई आसान नहीं होता है। हम आज उनकी स्मृति को नमन करते हैं।

कविताएं/गीत

एक पेड़ मां के नाम

बचपन में था मां से
बहुत गहरा लगाव
मां ने मेरे सपनों को
पंख दिए, ऊंची उड़ान दी
मैंने सोचा मां के नाम पर
कुछ करना चाहिए मुझे।
माली से कहा भैया!
एक फलदार पेड़ ले आओ।
फिर खोदकर बड़ा-सा गड्ढा
मैंने लगाया एक पेड़ मां के
नाम।
नियमित रूप से डालता रहा
पानी,
जैसे हर दिन मां खिलाती थी
चाव से।
पेड़ पत्तों के साथ छितरा गया
उसके नीचे बैठकर मुझे होता
एक खुशनुमा सुखद
अहसास।
वह पत्तों, फूलों और फलों
से लदा
मां की तरह मुझे रहा दुलार-
पुचकार।
हवा हो जाती शीतल और मैं
थोड़ा हल्का
पेड़ पर आये फलों की खुशबू
से खिच आते
तोते, गिलहरी और बंदर।
घर के भाई-बहनों की तरह
पेट भरकर
चलते बने मनचाही राहों पर।
पेड़ अब काफी बड़ा हो गया है
और मैं फिर थोड़ा छोटा।

नरेन्द्र सिंह "नीहार"
लेखक, नई दिल्ली

कितनी निःशब्द चीखें

उस दिन साहब पहुंच गए
लेकर अपने साथ एक झुण्ड
उस संकरी गली में
जहां रहती थी
कई मीना, टीना
रज्जो या मुमताज
पेटीकोट के ऊपर
गांठ लगी ब्लाउज में सहमी
देख रही थी टुकुर टुकुर
अपने उजड़ते आशियानों को
कोई छोटी बच्ची देखती है ज्यों
गीली आंखों से
आंधी बरसात की मार से
टूटते अपने घरौंदे को
लोगों ने साहब को
हाथों हाथ लिया
कसीदे पढ़े
उनके इस महत कार्य पर
क्योंकि दूर होगी उनके शहर से
यह गंदगी
पर उन चेहरों के भीतर छिपे
इंसान से रू-ब-रू होने की
ना किसी को फिक्र थी
और ना मजबूरी
साहब और झुण्ड वाले
फेंकने लगे उनके सामानों को
उन कोठरियों से बाहर
जो इकट्ठा हुए थे उन कमरों में
तिनका-तिनका जोड़ने की तरह
हर बार जिस्म को
लिजलिजा बनाने के बाद
कितने थप्पड़ घूंसे
और लात खाने के बाद
कितने दर्द कितने आंसू
पाउडर लिपस्टिक में और
झूठी मुस्कान में छिपाने के बाद
उन चेहरों से निकलने लगी
कितनी नि :शब्द चीखें
उनके बीच हुई मंत्रणा
आने वाले दिनों में फैल जायेंगी
शहर के कोने-कोने में
काश साहब के पास होती
एक सुंदर व्यवस्था
ताकि वो जी सकतीं एक
जिन्दगी
इंसान की मानिंद।

श्याम सुंदर चौधरी
कानपुर

मीठी यादें

खूबसूरत वो तेरी यादें मैं भुला
दूं कैसे
भूलना भी चाहूं तो, पर भुलाऊं
कैसे,
रह-रहकर याद आते हैं तेरी
बे-इंतहा वफ़ाई के किस्से
वो तेरी याद के किस्से मैं, तुम्हें
सुनाऊं भी तो कैसे

वो हवा के झोंके, हिलती
खिड़कियां
उस पर भी वो लहराते परदे
वो सर्द हवाओं में धूप की हल्की
सी किरणे
खुली रखता हूं खिड़कियां
आज भी,
उन्हें मैं भुलाऊं भी तो कैसे

ओ बे-ख़बर, वो बे-हिसाब सा
यकीन था तुझ पे
न जानें पछुवा हवाओं का, क्यों
फ़रक पड़ गया तुझ पे,

वो हरियाली सी काया, लहराते
से पत्ते
वो मजबूत तने सा बदन,
लहराती शाखे
रेंग रहे थे तुम धीरे-धीरे अपनी
ही मस्त चाल से,
न जानें फिर क्यूं कड़वे वृक्ष का
आसरा ले लिया,
अगर मोड़ना भी चाहूं तो फिर
तुम्हें मैं बताऊं कैसे,
वो मूल रूप खो दिया, तासीर
भी अब बदल गई
अपनी दुनिया छोड़कर, अब
दूसरा जहां बना लिया,
छूटी वो जगह वो जड़े, अब
बंजर और खोखली हो गई
अब उनका हाल भी सुनाना
चाहूं, तो तुम्हें सुनाऊं कैसे

याद है आज भी वो हरा भरा
रास्ता
कोयल की कूक से वो महका
सा रास्ता
नहीं है उनमें अब वो पहले जैसी
सुरम्यता
छोड़ दिया है हमने भी अब वो
पहले सा रास्ता।

डॉ. बी.पी.सिंह
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, उमियम

कहानी

भ्रूण

राजेश ओझा
गोण्डा

सेठ हर गोविंद अब घर वापस जा रहे थे। रात के दस बज चुके थे। बहन के बेटी का विवाह था जिससे वे दो दिन बहन के यहां व्यस्त थे। पिछले दिन कन्यादान हेतु स्वयं भी व्रत रखा था और आज एकादशी होने के कारण फिर व्रत थे। दो दिनों की भूख अपने चरम पर थी ऊपर से दो दिनों की भागदौड़ ने उन्हें और पस्त कर रखा था। अब कार की यह लंबी ड्राइविंग परेशान कर रही थी। बगल बैठी पत्नी ने सेठ का उतरा हुआ चेहरा देखा तो बोल पड़ीं-"किसी रेस्तरां में चलकर कुछ फलाहार ले लीजिए फिर चलिए।" सेठ हरगोविंद ने पत्नी को कोई जवाब न देकर गाड़ी को बगल में लगाकर रोक दिया। सेठानी ने इस सुनसान जगह पर गाड़ी रोकने का कराण जब तक जानना चाहा तबतक सेठ जी ने घर पर बेटे को फोन लगा दिया था। फोन बहू ने उठाया- "हां पापा, बताएं!" "बेटा, रोहित कहां गया..?" "वे तो सो गए पापा।" "ओह..! बेटा, मैं कह रहा हूं कि हम घर आ रहे हैं। अभी एक घंटे में पहुंच जाएंगे। कल कन्यादान के सिलसिले में व्रत था और आज एकादशी व्रत है। यहां शादी-विवाह का घर था। सभी लोग व्यस्त थे। फलाहार ठीक से हो नहीं पाया। तो कुछ बनाकर रखना तुम, हम पहुंच रहे हैं अभी।" सेठ जी एक सांस में कहते चए गए जबकि बगल बैठी पत्नी अचम्भित थी। वे सोचने लगीं भोजन या खाने को लेकर इतने व्यग्र ये कभी नहीं हुए थे, आज ऐसा क्या हो गया? तमाम बार आपस में हल्की कहासुनी में जब नाराज हो जाते हैं तब तो तीन-चार दिन मनाने पर भी नहीं खाते लेकिन आज ऐसा क्या हो गया? सेठानी, सेठ के इस व्यवहार पर विस्मित थीं। फिर सोचा-'क्या बेटे बहू की परीक्षा ले रहे हैं या फिर यह सामान्य व्यवहार है।' सेठानी ऐसा सोच ही रही थीं कि उधर से बहू की आवाज ने और चौंकाया- "पापा! जब आप वहां से चले थे तभी बताना चाहिए था। इनके कुछ मित्र आ गए थे जिससे घर में जो कुछ था वह उनके स्वागत-सत्कार में चला गया। अब घर में न फल हैं न कुछ और जिससे फलाहार बना सकूं। ये भी सो गए हैं। नहीं तो बगल के किराना वाले शर्मा अंकल के यहां से मंगवा ही लेती। आपने तो मुझे धर्म-संकट में डाल दिया।" "कोई बात नहीं बेटा। परेशान मत होना अब। रोहित को भी मत जगाना। अब कल ही खायेंगे।" कहकर सेठ जी ने दुखी मन से फोन रखा। सेठानी बगल में ही थीं। सब सुन रही थीं। फिर भी पूछ बैठीं- "क्या हुआ?" रोहित बहुत जल्दी सो गया आज !" सेठ आहत भाव में बोले थे। "श्रीमती जी ने अपनी फेसबुक वाल सेठ जी की तरफ कर दिया जहां रोहित न केवल आनलाइन दिख रहे थे बल्कि बाकायदा अपनी पोस्ट पर मित्रों की टिप्पणियों का जवाब भी दे रहे थे। सेठ जी कुछ देर सेठानी को देखते रहे फिर फिर गाड़ी को गियर में डाला और चल पड़े चुपचाप।

दोनों बेटियों को औपचारिक रूप से इण्टर करवा कर ब्याह दिया था जबकि बेटों की मंहगी पढ़ाई करवाकर ऑफिसर बनाया था। जब कोई बेटी बेटों के विषय में पूछता तो बहुत गर्व से बताते-"बेटियों का क्या है.. इण्टर करवाकर अच्छे घरों में ब्याह दिया है, वहां वे प्रसन्न हैं। अब अगर उनके घर वाले चाहेंगे तो आगे लिखा-पढ़ा देंगे। जबकि बेटों को मैने ऑफिसर बना दिया है। गांव जवांर में रुतबा है, और क्या चाहिए!"

यही सब सोचते हुए सेठ जी घर पहुंच गए थे। गाड़ी की आवाज सुनकर छोटी बेटी ने दरवाजा खोला तो सेठ-सेठानी दोनों चौंक पड़े- "तू कब आई अपने घर से..?" दोनों लोगों ने एकसाथ पूछा तो बेटी मुस्करा कर बोली- "पहले चलो हाथ मुह धुलकर आओ फलाहार करो, फिर सब बताती हूं।" सेठ-सेठानी एक दूसरे को देखकर मुस्काए फिर हाथ मुह धोने चले गए। तबतक बेटी, बड़े तरीके से कूटू के आंटे की पूड़ी और आलू प्लेट में लगाकर उनके कमरे में आ गई थी। सेठ-सेठानी फ्रेश होकर जैसे अपने कमरे में आए, बेटी बोली- "आप लोग खाओ तबतक मैं चाय लेकर आती हूं।"

सेठ ने उसे चाय के लिए मना करते हुए कहा- "पहले तू बैठ और ये बता कि कब आई तू और जब घर में कुछ था नहीं तो यह पूड़ी आलू बना कैसे?" सेठ जी सब एक साथ जान लेना चाहते थे।

बेटी मुस्करायी, फिर बोली- "भाभी फिर उम्मीद से हैं। एक बेटी उन्हें पहले से है ही तो मम्मी ने ही मुझसे कहा था एक दिन, कि तू चली आ और अपने ननद के पैथालाजी सेंटर पर अपनी भाभी का भ्रूण चेक करवा दे। चूंकि भ्रूण का परीक्षण कानूनन अपराध है तो अलग कोई करेगा नहीं। रही बात फलाहार की तो जब आप भाभी से फोन पर बात कर रहे थे तो भाभी के कमरे का टीवी आन होने के कारण उन्होंने अपने फोन को स्पीकर पर कर लिया था जिससे मैने बगल के कमरे में होते हुए भी आप दोनों की सब बातों को सुन लिया था।"

फिर..?"

"फिर क्या..! जब आप लोगों की बात हो रही थी तब मैं फेसबुक पर थी.. बगल के किराना वाले वाले शर्मा अंकल भी आनलाइन थे.. मैने उन्हें तुरंत इनबाक्स किया और वे अपने छोटे बेटे के हाथ सारा सामान भेजवा दिए थे।" "बेटा आनलाइन तो रोहित भी था उस समय लेकिन बहू ने कहा कि सो गए हैं।" फिर पत्नी की तरफ देखते हुए बोले- "अब भी भ्रूण चेक कराओगी लड़के की चाहत में?" सेठानी के पास कोई जवाब नहीं था और वे सर झुकाए बिल्कुल शांत बैठी रह गयीं थीं।

लघुकथा

गुमशुदा

शहर के नालों की सफाई का काम बरसात आते ही बढ़ जाता है। नालों में भरी सिल्ट और कचरा न निकाला गया तो गंदा पानी ओवरफ्लो होकर सड़कों में बहेगा। नगर निगम के चुनाव की घोषणा इसी महीने में होने वाली है इसलिए सफाई व्यवस्था चाक चौबंद दिखनी चाहिए। नालों से निकली हुई सिल्ट ट्रैक्टर-ट्राली में भरकर दूर कहीं खाली जमीन पर डाली जाती है। ट्रैक्टर दिन-रात दौड़ रहे हैं।

पप्पू और हाकिम दिन में निगम के इंजीनियर के बंगले में काम करते हैं और रात होते ही ट्रैक्टर से दो-तीन चक्कर सिल्ट उलटने का काम कर लेते हैं। शाम होते ही दोनों शराब पीकर तेजी से ट्रैक्टर दौड़ाते हैं। चूंकि ये दोनों इंजीनियर और ठेकेदार के खास आदमी है तो किसी की क्या मजाल जो उन्हें रोके-टोके।

'आज रात पांच ट्राली माल गिराना है।' हाकिम पप्पू से बोला।

'ये कैसे हो सकता है, बड़ी मुश्किल से हम दो या तीन चक्कर ही लगा पाते हैं।'

'कमाने का यही मौका है, समय बचाने के लिए हम चांदमारी मैदान के पास ही ट्राली खाली कर देंगे। रात में देखता ही कौन है?'

पप्पू को भी आइडिया पसंद आ गया। फिर तो सिल्ट से लदी ट्राली चांदमारी मैदान की ओर चल पड़ी...। घाघरा नदी की कटान से बेघर होकर विस्थापित हीरालाल अपने परिवार के साथ इसी मैदान के एक कोने में झुग्गी बनाकर रह रहे थे। आज रात गर्मी अधिक होने के कारण वह झुग्गी से थोड़ा हटकर एक किनारे चादर बिछाकर सो गए। हाकिम और पप्पू आनन फानन में हाइड्रोलिक डंपर ट्राली से भरी सिल्ट एक कोने में उलट दिए, उन्हें यह देखने का होश न था कि वहां थके-हारे हीरालाल गहरी नींद में सो रहे हैं। सिल्ट के पहाड़ के नीचे जिंदा दफन हो गए हीरालाल झटपटाए तो होंगे ही लेकिन इसे देखता कौन? हीरालाल की पत्नी अचानक गुमशुदा हो गए पति को ढूंढते हुए दर-दर भटक रही है।

अतुल मिश्र
डिप्टी मैनेजर (इफको) बरेली

उलझे हुए धागे

(रधिया सिलाई मशीन के पास बैठी है। पास में नीले, लाल, सफेद धागों की गुच्छियां उलझी पड़ी हैं। माया, उसकी चाची, कमरे में प्रवेश करती हैं।)

माया: "अरे रधिया, तू अब तक धागे सुलझा रही है? सुबह से देख रही हूं मशीन चली ही नहीं!"

रधिया: "मशीन तभी चलेगी, जब ये धागे अलग-अलग होंगे सब एक-दूसरे में फंसे हैं।"

माया: "धागे ही तो हैं, काट दे कुछ को नया लपेट ले। इतना माथा क्यों पच्ची कर रही?"

रधिया: "हर रंग का एक मतलब है, चाची ये नीला पापा की पैंट से बचा था ये सफेद मां की साड़ी से और ये लाल? ये तो मेरी पहली फ्रॉक का है। काट दूं क्या?"

वीना सिंह
लखनऊ

माया (थोड़ा नरम स्वर में): "तो क्या हर टुकड़ा सम्हाल कर रखेगी? पुराने धागे नई सिलाई में उलझन देते हैं, रधिया।"

रधिया: "मैं उलझन से डरती नहीं जो उलझे हैं, वही सिखाते हैं जोड़ना।"

माया: "कभी-कभी जोड़ने की कोशिश ही हमें और उलझा देती है।"

रधिया: "या फिर सिखा देती है कि धैर्य क्या होता है। देखो ना, ये गांठ खुल गई" (रधिया मुस्कुरा कर एक गांठ खोलती है और धागा लंबा खींचती है)

माया: "चलो कम से कम मशीन अब चलेगी?"

रधिया: "अब चलेगी भी और बोलेगी भी। हर टांका मेरी एक कहानी है, चाची उलझे हुए धागों से बुनी हुई।"

समीक्षा

जीवंत प्रतीक

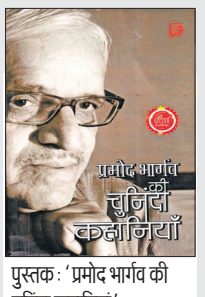

पुस्तक : 'प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियां'
लेखक : प्रमोद भार्गव
प्रकाशक : प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, गाजियाबाद
पृष्ठ : 281/मूल्य : 535 रुपये
समीक्षक-योगेश कुमार गोयल

बीते कई दशकों से लेखन में निरंतर सक्रिय साहित्यकार प्रमोद भार्गव की लेखनी ने उन्हें न केवल एक कुशल कथाकार बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी 22 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी लेखनी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करते बल्कि पाठकों को सोचने और आत्मविश्लेषण का अवसर भी प्रदान करते हैं। हाल ही में उनका नया कहानी संग्रह 'प्रमोद भार्गव की चुनिंदा कहानियां' आया है, जिसमें समाज के अनगिनत पहलुओं को समेटे हुए उनकी कुल 20 उत्कृष्ट कहानियां सम्मिलित हैं। इन कहानियों की विशेषता यही है कि ये समाज में व्याप्त विसंगतियों को उजागर करते हुए मानसिक एवं भावनात्मक द्वंद्व को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। यह कहानी संग्रह समाज के विभिन्न पक्षों से रूबरू कराते हुए पाठकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है और मानवीय मनोविज्ञान की जटिलताओं को उद्घाटित करने के साथ-साथ मानवीय व्यवहार के सूक्ष्म पहलुओं का भी प्रभावशाली चित्रण करता है।

व्यंग्य

साहित्य जगत के फोकटिया बाबू

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार

साहित्य जगत में इनकी जबरदस्त धाक होती है, दूसरे शब्दों में कहें तो जबरदस्ती की धाक होती है। माता शारदे के प्रभावशाली पुत्र होते है ये। जिस प्रकार कोर्ट में तारीख़ पर तारीख़ मिलती है वैसे ही सोशल मीडिया पर की गई उनकी बेबाक टिप्पणी पर तारीफ़ पर तारीफ़ मिलती है। ये साहित्य के वास्तविक उद्धारक होते हैं। ऐसे साहित्य पुरूष का जीवन साहित्य सेवा को नहीं, अपितु साहित्य सेवन के लिए होता है। सोशल मीडिया पर इनकी टिप्पणी व प्रतिक्रिया से संपादक से लेकर प्रकाशक तक त्राहिमाम रहते हैं। साहित्य जगत में कोई इन्हें अक्खड़ अथवा स्पष्टवादी तो कोई मुखर तो कुछ लोग छींट या पगला के उपनाम से भी संबोधित करते हैं। पत्रिका की लेखकीय प्रति प्राप्त ना होने अथवा रचनाओं के प्रकाशित नहीं किए जाने पर कब फलाना मैगजीन के ढिमकाना संपादक को सोशल मीडिया के खुले मंच पर इनका कोपभाजन बनना पड़ जाय कहना मुश्किल है।

आइये आपको परिचय कराते हैं ऐसे साहित्य शिरोमणि पुरूष से जो पृथ्वी पर सृजन का चलता-फिरता पुतला हैं। ये हैं फोकटिया बाबू! ये पृथ्वी पर पदार्पण से लेकर कालजयी साहित्य सृजन तक के साहित्यिक अवधि में किसी पत्रिका की वार्षिक सदस्यता तो दूर, साल में एक दिन न्यूज़ पेपर भी खरीद कर नहीं पढ़ते। भले ही इनके पास किसी मैगजीन की सदस्यता नहीं हो, किंतु नियमित छपने एवं निःशुल्क मैगजीन प्राप्ति की इच्छा इनके कलेजे में हमेशा उफान मारती रहती है। इन्हें फर्क नहीं पड़ता कि पत्रिका छापने के लिए आवश्यक कागज के लिए कितने पेड़ो की कुर्बानी देनी पड़ी हैं। इन्हें तो बस अपनी रचना छपने से सारोकार है,क्योंकि फोकटिया बाबू को साहित्य के लिए आक्सीजन तो पत्र-पत्रिकाओं से ही प्राप्त होता है। मुफ्त में छापने वाला प्रकाशक मिले तो एक माह में ये सवा तीस (तीस पुस्तक एक स्मारिका) पुस्तकों के सृजन और विमोचन करवाने की कूवत भी रखते हैं।

साहित्य सेवन का खुमार इन पर इतना हावी रहता है कि ये रचनाएं मेल करने के अगले क्षण ही संबंधित पत्र-पत्रिका के संपादक के सीने पर सवार हो जाते हैं अर्थात मोबाइल, मैसेंजर, व्हाटसएप्प, आदि हर संभावित साधनों से संपादक अथवा प्रकाशक से संपर्क साध अपनी प्रेषित कृति की सूचना एवं उसके प्रकाशन संबंधित जवाबी सूचना का तत्क्षण ही आदान-प्रदान कर लेते है।

प्रातःकालीन, सांध्यकालीन, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक से लेकर अनियतकालीन तक, दुनिया की तमाम पत्र-पत्रिकाओं की मेल आईडी इनके पास उपलब्ध रहती है। समीक्षा के नाम पर आयातित निःशुल्क पुस्तक से इनके घर में पैर रखने तक की जगह शेष नहीं रहती। ये उम्मीद करते हैं कि क्षेत्रीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली साहित्यिक गोष्ठियों में इन्हें वाहन किराया-भाषा, शॉल, श्रीफल देकर विशिष्ट अतिथि के रूप में निमंत्रित किया जाए। आर्थिक खर्च करने में इनकी आस्था कतई नहीं होती वैसे भी ये आर्थिक संपदा से क़ीमती बौद्धिक संपदा (रचना सृजन)का दान तो कर ही रहे हैं। बहरहाल आपको ऐसे दिव्य पुरुष के दर्शन अथवा साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए किसी पत्र-पत्रिका का अनिवार्य रूप से संपादक अथवा प्रकाशक बनना पड़ेगा।

स्वरों की शब्द-व्यंजना

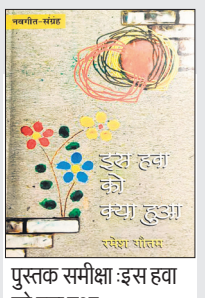

पुस्तक समीक्षा :इस हवा को क्या हुआ
लेखक : रमेश गौतम
प्रकाशक : अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली
मूल्य : 300
समीक्षक-हरिशंकर सक्सेना

नवगीत के सिद्धहस्त रचनाकार रमेश गौतम के नवगीत संग्रह लक्षणा और व्यंजना से सुसज्जित, बिम्बधर्मी शिल्प का सुंदर निर्वहन करते हैं। 'इस हवा को क्या हुआ' संग्रह में गीत व्यवस्था की संवेदनहीनता और क्रूरता को बेनकाब करता है। कुछ पंक्तियां इष्टव्य हैं-सच न जाने/इस हवा को क्या हुआ तितलियों की देह पर/चाकू चलाती यह हवा जुगनुओं को धर्म के/रिश्ते बताती यह हवा (पृ.77) यहां हवा व्यवस्था का प्रतीक है। ऐसी व्यवस्था जो मनुष्य के जीवन-मूल्यों को ध्वस्त करके उसकी कोमल भावनाओं को लहूलुहान कर रही है। इस व्यवस्था के लिए वे तमाम अवसरवादी राजनेता जिम्मेदार है जो समाज के ज्वलन्त प्रश्नों को नज़र-अन्दाज करके केवल अपनी स्वार्थसिद्धि में लिप्त रहते हैं। समीक्ष्य संग्रह में पर्यावरण संरक्षण को लेकर एक मटमैली नदी और गौरख्या पर केन्द्रित रचनाएं भी आश्वस्त करती है। किसानों की आत्महत्याओं को केन्द्र में रखकर कवि ने उनके जीवन की त्रासद स्थितियों को रेखांकित करने के साथ-साथ शासन-प्रशासन को भी आड़े हाथों लिया है।

वर्षा ऋतु और गुदा संक्रमण: आयुर्वेद की दृष्टि में कारण और निवारण

बरसात का मौसम जहां एक ओर हरी-भरी प्रकृति और वातावरण में ठंडक लेकर आता है, वहीं दूसरी ओर यह कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी बनता है। इस मौसम में वातावरण में नमी बढ़ जाती है, जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है और संक्रमणों का खतरा बढ़ जाता है। विशेष रूप से मल द्वार (गुदा) की समस्याएं जैसे खुजली, जलन, बवासीर, फिशर, और फंगल संक्रमण बहुत आम हो जाती हैं। इन समस्याओं के पीछे मुख्य रूप से गीले कपड़े, पसीना, व्यक्तिगत स्वच्छता में कमी और कमजोर पाचन प्रणाली जिम्मेदार होते हैं।

डॉ अभय प्रकाश
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, विभागाध्यक्ष, शल्य तंत्र, रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय बरेली

क्यों बढ़ती हैं बरसात में मल द्वार की समस्याएं

बरसात के मौसम में वात दोष का प्रकोप बढ़ जाता है साथ ही पित्त दोष का संचय काल भी बढ़ जाता है। आयुर्वेद के अनुसार यह ऋतु वातप्रकृति को उत्तेजित करती है, जिससे पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है। भोजन सही से न पचने के कारण शरीर में अपक्व रस और विषाक्त तत्व उत्पन्न होते हैं, जो मल मार्ग को प्रभावित करते हैं। साथ ही नमी और पसीने के कारण गुदा क्षेत्र पर बैक्टीरिया और फंगस तेजी से पनपने लगते हैं, जिससे संक्रमण, खुजली और जलन की समस्या शुरू होती है।

सामान्य समस्याएं और उनके लक्षण

गुदा में खुजली- बरसात के मौसम में यह सबसे आम समस्या है जिसमें गुदा के आसपास लगातार खुजली होती है। यह फंगल संक्रमण, पसीने और गंदगी के कारण होता है। इसमें जलन और लालिमा भी देखी जा सकती है।

बवासीर - बवासीर में गुदा के भीतर या बाहर मस्से जैसे उभार बन जाते हैं जिनमें दर्द और कभी-कभी खून भी आ सकता है। यह समस्या खासकर उन लोगों में ज्यादा होती है जो कब्ज से पीड़ित होते हैं।

गुदा में दरार -फिशर गुदा की त्वचा में दरार होती है जिससे मल त्याग करते समय अत्यधिक दर्द और रक्तस्राव होता है। यह प्राय: कठोर मल के कारण होता है।

फंगल इन्फेक्शन- बरसात में गीले कपड़े और पसीने के कारण गुदा के पास की त्वचा पर फंगल संक्रमण हो जाता है जिससे खुजली और बदबू आने लगती है।

पाइलोनाइडल साइनस और फोड़े

नमी और बालों की जड़ में संक्रमण होने से फोड़ा या पाइलोनाइडल साइनस हो सकता है। इसमें मवाद बनता है और दर्द भी होता है।

कारण-हमारी जीवनशैली और आदतें

गुदा की इन समस्याओं के पीछे हमारी गलत जीवन शैली और स्वच्छता की कमी सबसे बड़ा कारण है। बरसात में नमी और गीले कपड़े पहनने की आदत, गंदे शौचालयों का प्रयोग, बार-बार पसीने से भीगे कपड़े न बदलना, और शौच के बाद उचित सफाई न करना, ये सभी बातें संक्रमण को बढ़ावा देती हैं। इसके अलावा बरसात में तले-भुने, भारी और मसालेदार भोजन के कारण पाचन बिगड़ जाता है जिससे कब्ज और बवासीर जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

आयुर्वेद में मल द्वार से जुड़ी समस्याओं को वात-पित्त दोष की विकृति के रूप में देखा गया है। वात दोष के कारण सूखापन, दर्द और दरारें बनती हैं जबकि पित्त दोष के कारण जलन, खुजली और सूजन होती है। इन दोषों को संतुलित करने के लिए पंचकर्म चिकित्सा, हर्बल औषधियां और विशिष्ट आहार-व्यवहार अपनाने की आवश्यकता होती है।

बचाव के उपाय और घरेलू समाधान

बरसात के मौसम में यदि आप कुछ सावधानियां अपनाएं तो गुदा संबंधी समस्याओं से बचा जा सकता है।

व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखें

हर शौच के बाद गुनगुने पानी से गुदा की सफाई करें और उसे सूखे कपड़े से अच्छी तरह सुखाएं। नमी से बचने के लिए कॉटन के ढीले अंडरवियर पहनें।

नीम और त्रिफला का प्रयोग करें

नीम में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं। नीम के पत्तों को उबालकर उस पानी से दिन में एक बार गुदा धोने से संक्रमण नहीं होता। त्रिफला चूर्ण का सेवन रात को करने से कब्ज नहीं होता।

नारियल तेल और देशी घी का उपयोग

नारियल तेल या देशी घी गुदा की त्वचा पर लगाने से जलन और सूजन में राहत मिलती है।

हल्का भोजन लें

बरसात के मौसम में तला-भुना, भारी, खट्टा और मसालेदार खाना खाने से परहेज करें। इसकी जगह खिचड़ी, दाल, हरी सब्जियां और फलों का सेवन करें।

धूप का सेवन करें

फंगल संक्रमण से बचने के लिए गुदा क्षेत्र को हल्की धूप दिखाना फायदेमंद होता है

आयुर्वेदिक औषधियां और उपचार

गंभीर या पुरानी समस्या की स्थिति में आयुर्वेदिक औषधियां अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती हैं, परंतु इनका सेवन चिकित्सक की सलाह से ही करें।

पंचकर्म चिकित्सा

पंचकर्म आयुर्वेद की विशेष चिकित्सा पद्धति है जो शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में सहायक होती है। यदि गुदा संबंधी समस्याएं बार-बार हो रही हों या पुरानी हो गई हों, तो नीचे दी गई पंचकर्म विधियां उपयोगी हो सकती हैं।

बस्ति चिकित्सा : वात दोष को संतुलित करने और कब्ज से राहत देने में सहायक, क्षारसूत्र चिकित्सा : पुराने बवासीर और भगंदर के इलाज के लिए कारगर, अवगाह स्नान : नीम या त्रिफला जल से दिन में 1-2 बार स्नान करने से सूजन और खुजली में आराम मिलता है।

क्या न करें

गंदे और नम कपड़े बार-बार न पहनें, गुदा क्षेत्र को अधिक रगड़कर न धोएं, मसालेदार, भारी भोजन और जंक फूड से परहेज करें, गंदे शौचालयों का प्रयोग न करें, देर तक एक जगह बैठे रहने से बचें।

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव

रोजाना कम से कम 2 से 3 लीटर पानी पिएं, अपने खानपान में फाइबर युक्त भोजन जैसे फल, सलाद और अंकुरित अनाज को शामिल करें, कब्ज से बचने के लिए नियमित दिनचर्या अपनाएं, योग और प्राणायाम करें जैसे पवनमुक्तासन, भुजंगासन, और ताड़ासन।

चिकित्सकीय सलाह कब आवश्यक है

यदि मल द्वार से खून आना, अत्यधिक जलन, सूजन, फोड़ा, मवाद निकलना या मल त्याग में अत्यधिक कष्ट हो तो तुरंत किसी योग्य चिकित्सक से संपर्क करें। ऐसे लक्षण किसी गंभीर गुदा विकार के संकेत हो सकते हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। बरसात का मौसम शरीर के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय होता है, खासकर तब जब व्यक्ति स्वच्छता, खानपान और जीवनशैली पर ध्यान नहीं देता। मल द्वार की समस्याएं छोटी दिखने वाली समस्याएं हो सकती हैं लेकिन यदि इन्हें समय पर रोका न जाए तो यह दर्दनाक और जटिल रूप ले सकती हैं। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से वात और पित्त दोष के नियंत्रण द्वारा इन समस्याओं का सफलतापूर्वक इलाज किया जा सकता है। स्वच्छता, संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या और समय पर उपचार इन सभी समस्याओं को दूर रखने में सहायक होते हैं। यदि समस्या लगातार बनी रहे या बार-बार लौटे, तो नजदीकी आयुर्वेदिक चिकित्सालय जैसे रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय बरेली से परामर्श लेना उचित रहेगा जहां विशेषज्ञों द्वारा समग्र उपचार उपलब्ध है।

खाना खजाना

मूंगों रो खाटो

सामग्री

- 1 कप साबुत मूंग
- 1 कप खट्टा दही
- 1 बड़ा चम्मच बेसन
- 1/2 चम्मच गरममसाला पावडर
- 2 सूखी लालमिर्च
- 2 टुकड़े दालचीनी
- 2 बड़ी इलायची
- 3/4 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1/2 चम्मच हल्दी पाउडर
- 2 बड़े चम्मच घी
- 1 चम्मच राई या सरसों
- 5-8 कढ़ी पत्ता
- 1/4 चम्मच हींग
- 1/2 चम्मच अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट
- नमक स्वादअनुसार
- 2 बड़ा चम्मच कटा हुआ हरा धनिया

जब भी दही या छाछ से कोई व्यंजन बनाना हो तो सबसे पहले जहन में आता है "कढ़ी" जिसे मारवाड़ में "खाटो" बोलते हैं। मारवाड़ के पारंपरिक स्वाद में बेसन की कढ़ी यानी खाटो कई तरह से बनाई जाती है, केवल बेसन की, काले चने की, चने की दाल की, बेसन के चिलड़े की और मौसमी सब्जियों की आदि आदि... आज आपके लिए लाए है ख़ास पौष्टिक और स्वादिष्ट "मूंगों रो खाटो" यानी साबुत मूंग की मसालेदार कढ़ी।

बनाने की विधि सबसे पहले आप मूंग को धोकर, उपयुक्त मात्रा के पानी में 4 घंटे के लिए भिगो दें। बाद में छानकर, 1,1/2 कप पानी डालकर 2 सीटी के लिए प्रेशर कुकर में पका लें। ढ़क्कन खोलने से पूर्व सारी भाप निकलने दें। एक तरफ रख दें।

दही, बेसन, लाल मिर्च पाउडर और हल्दी पाउडर को एक बाउल में मिलाकर अच्छी तरह फेंट लें। और एक तरफ रख दें। एक नॉन-स्टिक कढ़ाई में घी गरम करें और राई या सरसों, लालमिर्च के टुकड़े, दालचीनी, बड़ी इलायची, कड़ी पत्ता, हींग और अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट डालें। जब राई चटकने लगे, तब उबला हुआ मूंग डालकर अच्छी तरह मिला लें और मध्यम आंच पर 30 सेकंड तक पका लें।

दही-बेसन का मिश्रण, नमक, गरममसाला और 1,1/4 कप पानी डालकर अच्छी तरह मिला लें और बीच में एक बार हिलाते हुए, मध्यम आंच पर 5 से 7 मिनट के लिए पका लें। एक सर्विंग बाउल में इस स्वादिष्ट मसालेदार मूंग के खाटो को धनिया से सजाकर बाजरी के सोगरे या रोटी या सादे चावल के साथ गरमा गरम परोसें और पारंपरिक ज़ायके के स्वाद का आनंद ले।

एस.बी. मुथा
फूड ब्लॉगर

मोबाइल की जाल में फंसा मासूम बचपन

आज के तकनीकी युग में मोबाइल फोन हर घर में आम बात हो गई है। गांव हो या शहर, छोटे-बड़े सभी लोग मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं। मोबाइल ने हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। यह केवल बात करने का साधन नहीं रह गया, बल्कि मनोरंजन, पढ़ाई, जानकारी और आपसी जुड़ाव का मजबूत माध्यम बन चुका है।

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव
चिकित्सक, लखनऊ

बच्चों के जीवन में भी मोबाइल की जगह अब बढ़ गई है। पहले बच्चे बाहर खेलते थे, दोस्तों के साथ मैदान में दौड़ते थे, पेड़ों पर चढ़ते थे या खेल-खेल में नई चीजें सीखते थे। लेकिन आज के बच्चे घंटों मोबाइल पर गेम खेलते हैं, कार्टून या यूट्यूब देखते हैं। कई बार माता-पिता बच्चों को चुप कराने के लिए या अपने काम में ध्यान लगाने के लिए उन्हें मोबाइल पकड़ा देते हैं। यह सही है कि मोबाइल से बच्चों को कुछ फायदे भी मिलते हैं। वे नई-नई चीजें सीखते हैं। दुनिया भर की जानकारी मिलती है। बहुत से शैक्षणिक ऐप्स और वीडियो बच्चों की पढ़ाई में मदद करते हैं। कोरोना जैसी महामारी के समय में तो मोबाइल ने स्कूल की कक्षाओं की कमी को काफी हद तक पूरा किया। बच्चों ने ऑनलाइन क्लास के माध्यम से पढ़ाई जारी रखी।

फायदे और नुकसान

मोबाइल के फायदे जितने हैं, नुकसान भी उतने ही बड़े हैं। सबसे बड़ा खतरा बच्चों की आंखों पर पड़ता है। छोटे बच्चों की आंखें जल्दी कमजोर हो जाती हैं। ज्यादा देर स्क्रीन देखने से सिरदर्द और नींद में भी परेशानी होती है। मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल बच्चों को शारीरिक रूप से भी नुकसान पहुंचाता है। बच्चे घर में बैठ जाते हैं, उनका बाहर खेलना-कूदना बंद हो जाता है। इससे उनका शरीर कमजोर होता है और मोटापा बढ़ सकता है। इसके अलावा मोबाइल पर ज्यादा गेम खेलने से बच्चे चिड़चिड़े, गुस्सैल और अकेलेपन के शिकार हो सकते हैं। कई बार बच्चे मोबाइल में ऐसा वीडियो भी देख लेते हैं जो उनकी उम्र के लिए सही नहीं होता। माता-पिता को इसका ध्यान रखना बहुत जरूरी है। आजकल बच्चों में मोबाइल की लत बहुत तेजी से बढ़ रही है। अगर सही समय पर ध्यान न दिया गया तो यह आदत आगे चलकर बहुत नुकसान कर सकती है।

माता-पिता की जिम्मेदारी

माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को मोबाइल का सीमित और सही उपयोग करना सिखाएं। बच्चों को खाली समय में किताबें पढ़ने, कहानी सुनने, चित्र बनाने, मिट्टी के खिलौने बनाने और बाहर खेलने के लिए प्रेरित करें। परिवार के साथ समय बिताना, दादा-दादी से बातें करना भी बच्चों के विकास के लिए जरूरी है। बच्चों को मोबाइल नहीं माता पिता का साथ चाहिए।

सबसे जरूरी बात यह है कि मां-बाप खुद भी मोबाइल का कम इस्तेमाल करें, क्योंकि बच्चे वही सीखते हैं जो वे देखते हैं। अगर माता-पिता हर समय मोबाइल में व्यस्त रहेंगे तो बच्चे भी यही आदत अपनाएंगे। हमें समझना चाहिए कि मोबाइल हमारी जरूरत है, लेकिन बच्चों का बचपन मोबाइल से कहीं ज्यादा अनमोल है। हमें अपने बच्चों को अच्छी आदतें, अच्छे संस्कार और स्वस्थ जीवनशैली देनी चाहिए ताकि वे एक अच्छे नागरिक बन सकें। अंत में "मोबाइल बच्चों को दें, पर साथ में अपना समय भी दें-ताकि बचपन हंसता-खेलता रहे।"

फिल्म जगत

कमियों पर भारी पड़ीं अच्छाईयां

बॉलीवुड में बहुत कम फिल्में हैं जो हृदय की गहराई को छू पाती है। अभिषेक मुझे गुरु फिल्म से ही पसंद आते रहे पर उनके हिसाब का रोल उन्हें कभी नहीं मिला। इधर बीच पिछले तीन चार सालों से अभिषेक ने ओटीटी में कमाल किया है। शानदार फिल्में की फिर चाहे वो "दसवीं फेल" हो "घूमर" हो या फिर अब "कालीधर लापता" और भी कुछ ओटीटी रिलीज हैं थ्रिलर भी हैं जिसमें अभिषेक ने बेहतरीन काम किया। अब बात करते हैं "कालीधर लापता" की, एक सुंदर, सहज, हृदयतल तक रस से भिगो देने वाली फिल्म है इसके कुछ डायलॉग हैं फिल्म से जिन्हें शायद मैं कभी न भूला सकूं... जैसे "बिना ढंग से मेहनत किए नींद भी नहीं आती"... "इसीलिए मैं बड़े लोगों से दोस्ती नहीं करता, सब बाप बनने लग जाते हैं"... "हर रिश्ते की एक एक्सपायरी होती है"... ये डायलॉग ही हैं जो सिनेमा को कलजयी बनाते हैं। कालीधर लापता एक कलजयी फिल्म है, क्योंकि इसके डायलॉग कलजयी हैं, अभिनय बेहतरीन और इतना बांधने वाला है कि आप बस अपने मुस्कुराते होठों और भीगीं आंखों के साथ आंखें खुली रखते हैं। फिल्म में कमियां भी हो सकती हैं पर इसकी अच्छाईयां इसकी कमियों पर भारी हैं। **समीक्षक**-अमित तिवारी

द गुड वाइफ

प्रसिद्ध तमिल एक्टर और डायरेक्टर रेवती ने प्रसिद्ध अमेरिकन टीवी सीरीज "द गुड वाइफ" का तमिल संस्करण प्रस्तुत किया है। यह आधे आधे घंटे की सात एपिसोड्स में हिंदी में भी उपलब्ध है। कहानी का भारतीयकरण किया गया है। मुख्य रोल प्रियामणि का है जो एडवोकेट जनरल संपत राज की पत्नी है और स्वयं एडवोकेट भी है। एडवोकेट जनरल को एक रिश्वतखोरी और वेश्यावृत्ति के आरोप में जेल हो जाती है और इन दोनों का परिवार जिसमें इनके दो बच्चे और मां भी है बिखर जाता है। प्रियामणि को एक फर्म में वकील की नौकरी करनी पड़ती है और परिवार को समाज के ताने और तिरस्कार झेलना पड़ता है। शुरु में सब को सम्पत दोषी लगता है पर वह और उसके दोस्त धीरे धीरे उसको राजनीति में फंसाए जाने की बात से प्रियामणि को समझाते हैं। पर चीजें बदलती हैं या नहीं, केस में क्या फैसला होता है और प्रियामणि की शादीशुदा जिंदगी पर इस सब का कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं, यही कहानी है। सबकी एक्टिंग अच्छी है। दो तीन जगहों पर रेवती के निर्देशन और प्रियामणि की अदाकारी का अच्छा प्रदर्शन होता है। फिर भी "गुड वाइफ" न तो मूल सीरियल और न ही इस कहानी में कुछ खास कहने में सफल हो पाई है। **समीक्षक**-ब्रज राज नारायण सक्सेना

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष
यह सप्ताह आपाधापी भरा रहने वाला है। सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर-कारोबार में कुछ अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान छोटे-छोटे कार्यों को भी पूरा करने के लिए आपको अधिक मेहनत और प्रयास करना पड़ेगा। सप्ताह की शुरुआत में छोटी यात्राओं के योग बनेंगे।

वृष
यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ और उन्नति प्रदान करने वाला साबित होगा। सप्ताह की शुरुआत से ही आपको दैनिक कार्यों में अनुकूलता बनी रहेगी। आपको घर और बाहर दोनों जगह लोगों से भरपूर सहयोग और समर्थन मिलता हुआ नजर आएगा। आप सभी ओर से खुद को सुरक्षित महसूस करेंगे।

मिथुन
यह सप्ताह शुभता और सौभाग्य लिए हुए है। यदि आप व्यवसायी हैं और बीते कुछ समय से बाजार में मंदी का सामना कर रहे थे या फिर कारोबार में आपको मनमुताबिक लाभ की प्राप्ति नहीं हो रही थी, तो आपकी यह शिकायत इस हफ्ते दूर हो सकती है। कारोबार में मनचाहा लाभ होगा।

कर्क
इस सप्ताह चीजें कभी मन मुताबिक तरीके से बनती हुई नजर आएंगी, तो कभी आपको कार्यों में अनचाही समस्याओं से जूझना पड़ेगा। उन लोगों से खूब सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी जो अक्सर भावनात्मक दबाव बनाकर आपको ठगने की या फिर कहें, अपना काम निकलवाने की कोशिश में लगे रहते हैं।

सिंह
यह सप्ताह शुभ और लाभप्रद बना रहेगा। इस सप्ताह आपके सभी सोचे हुए कार्य समय पर आपके मन मुताबिक पूरे होते हुए नजर आएंगे। करियर हो या फिर कारोबार, हर जगह आप अपने विरोधियों पर विजय हासिल करते हुए मनचाही प्रगति हासिल करेंगे। सप्ताह के पूर्वार्ध में आप शत्रु संबंधी मामलों में बड़ी विजय हासिल कर सकते हैं।

कन्या
इस सप्ताह सोचे हुए कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए अधिक कर्म, अधिक परिश्रम और अधिक प्रयास की आवश्यकता रहेगी। यदि आप आलस्य और अभिमान छोड़कर ऐसा करने में कामयाब रहते हैं, तो आप जीवन में आने वाली सभी अड़चनों को दूर करते हुए अंतत: सफलता एवं लाभ प्राप्त करेंगे। समय का सदुपयोग और संबंधों का आदर करने की आवश्यकता भी रहेगी।

तुला
यह सप्ताह सकारात्मक फल लिए रहने वाला है। आपको प्रत्येक कार्य में मनचाही सफलता और लाभ की प्राप्ति होगी। आपके आर्थिक स्रोतों में वृद्धि होगी। बाजार में आपकी साख बढ़ेगी। नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति के योग बनेंगे। यदि आप अपनी नौकरी में बदलाव के लिए प्रयासरत थे, तो ये ख्वाहिश पूरी हो सकती है।

वृश्चिक
यह सप्ताह थोड़ा खर्चीला रहने वाला है। आपके सिर पर अचानक से कुछ बड़े खर्च आ सकते हैं, जिसके चलते आपका बना-बनाया बजट गड़बड़ा सकता है। अनेक तरह की उतार-चढ़ाव भरी स्थितियों के बने रहने के बावजूद यदि आप धैर्य और विवेक को बनाए रखते हैं, तो चीजें अंतत: आपके पक्ष में जाएंगी।

धनु
इस सप्ताह किसी प्रभावी व्यक्ति अथवा इष्ट-मित्रों की मदद से करियर-कारोबार से जुड़ी चिंता या मुश्किलें दूर होंगी। सप्ताह की शुरुआत में यात्रा पर जाने के योग बनेंगे। यात्रा सुखद एवं नए संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। व्यवसाय में योजनाबद्ध तरीके से काम करने पर विशेष लाभ प्राप्ति के योग बनेंगे। घर-परिवार में भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

मकर
इस सप्ताह सही और गलत तथा अपने और पराए के बीच फर्क करने में मुश्किलें आ सकती हैं। आप किसी भी निर्णय को लेने में असमंजस की स्थिति से गुजरेंगे, जिसके चलते गलत निर्णय लेने की आशंका बनी रहेगी। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं, तो धन के लेन-देन में खूब सावधानी बरतें। इस दौरान घर और बाहर दोनों जगह लोगों के साथ वाद-विवाद करने से बचें।

कुंभ
इस सप्ताह किस्मत का पूरा साथ मिलेगा, जिसके चलते आपके सोचे हुए कार्य समय पर मनचाहे तरीके से पूरे होते हुए नजर आएंगे। आप सभी क्षेत्रों में अपने आपको सुरक्षित महसूस करेंगे। जमीन-जायदाद से जुड़े विवादों का हल आपसी बातचीत से निकलेगा। इस दौरान आपके स्वभाव में कुछ तेजी देखने को मिलेगी।

मीन
यह सप्ताह थोड़ा चुनौती भरा रह सकता है। ऐसे में उन्हें पूरे हफ्ते अपने कामकाज में किसी भी प्रकार की लापरवाही से बचते हुए अपने विरोधियों से सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरीपेशा लोगों के लिए थोड़ी उठा-पटक लिए रहने वाली है। इस दौरान उनके सिर पर अचानक से कामकाज का अतिरिक्त बोझ आ सकता है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 17

		37	17		39	11	36	
	3			8				
	8			17 21			3	
	10					4 19		
	29 4							
36								
3			29 10					
	7				9			
	23				11			

काकुरो 16 का हल

			9	7	18	
		12 26	8	2	2	
	9 3	2	1	1	5	
4	1	3	6 11	5	1	
14	2	7	5	11	6	5
	10	4	6	7	2	5

जोक्स ऑफ द डे

गर्लफ्रेंड : तुम्हें देखकर दिल में कुछ-कुछ होने लगता है
बॉयफ्रेंड : हां, मैं भी होश खो बैठता हूं, जब तुम पास से गुजरती हो तब क्योंकि तुम्हारा परफ्यूम ही कुछ ऐसा है
दम घुटने लगता है, सच में!

महिला डॉक्टर- भोलू जब तुम परेशान होते हो तो क्या करते हो? भोलू- जी मैं मंदिर चला जाता हूं
महिला डॉक्टर- बहुत अच्छा करते हो बेटा, फिर ध्यान लगाते हो न वहां? गोलू- जी नहीं, लोगों के जूते चप्पल मिक्स कर देता हूं, फिर उन लोगों को परेशान होते हुए देखता हूं।

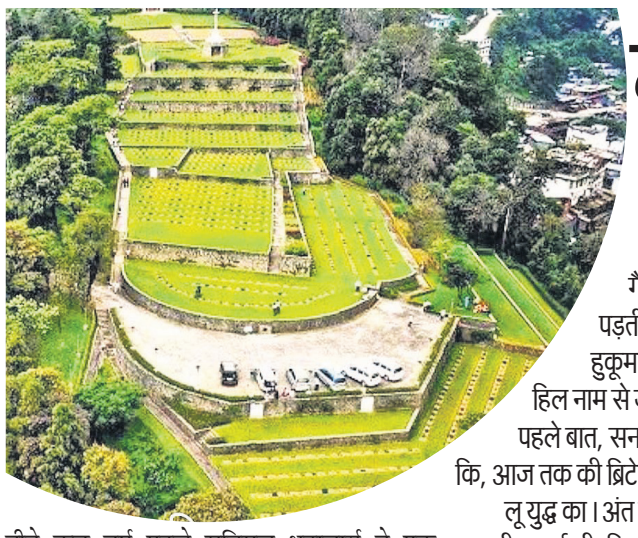

कोहिमा द्वितीय विश्व युद्ध की सबसे बड़ी लड़ाई

गैरीसन हिल : भारत देश का वह स्थान, जहां जाने के लिए ब्रिटिश शासन से अनुमति लेनी पड़ती है। है ना आश्चर्य जनक? कहते हैं कि विश्व में ऐसे 130 स्थान है, जहां आज भी ब्रिटिश हुकूमत चलती है। उन्हीं में से एक स्थान नागालैंड की राजधानी कोहिमा में भी है, जिसे गैरीसन हिल नाम से जाना जाता है। पूरा माजरा क्या है? यह जानने के लिए हमें इतिहास के पन्ने पलटने होंगे। पहले बात, सन 2013 की... लंदन के इंपीरियल वॉर म्यूजियम में एक मीटिंग के दौरान चर्चा हो रही थी कि, आज तक की ब्रिटेन की सबसे बड़ी लड़ाई कौन सी थी। कुछ ने डी-डे युद्ध का नाम लिया तो कुछ ने वाटर-लू युद्ध का। अंत में सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि, ब्रिटेन की सबसे बड़ी लड़ाई, भारत में कोहिमा-इंफाल की लड़ाई थी, जिसे द्वितीय विश्वयुद्ध का सबसे भयंकर खूनी युद्ध कहा जाता है। भारत की भूमि पर हुए इस भयानक युद्ध को आखिर क्यों भुला दिया गया? कौन से पक्ष थे, जो नरसंहार पर उतारू थे? आखिर क्यों इस युद्ध को "भूली जा चुकी लड़ाई" कहा जाता है?

बीते कुछ वर्ष पहले सुबिमल भट्टाचार्य ने एक डॉक्यूमेंट्री "मेमोरी ऑफ ए फॉरगोटेन वॉर" रिलीज की है, जिसमें कोहिमा इंफाल की लड़ाई से जुड़े तथ्यों को दिखाया गया है। कहते हैं ब्रिटिश सेना और जापानी सेना के बीच का यह एक ऐसा युद्ध था, जिसने अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध की दिशा को निर्णायक मोड़ दिया था। भट्टाचार्य वही निर्माता हैं, जिन्होंने जापानी सेना की समर्पण की 75वीं सालगिरह पर जापान का दौरा किया था। वे बताते हैं कि इस समारोह में शिरकत करने वाले ब्रिटिश और जापान के, काफी वृद्ध हो चले, पूर्व सैनिक एक दूसरे को गले लगाकर रो रहे थे। इनमें कुछ ऐसे सैनिक भी थे, जिन्होंने युद्ध के दौरान एक दूसरे पर गोलियां भी चलाई थी। आज इनके बीच एक खास किस्म का रिश्ता दिख रहा था, जिसकी हमने कल्पना भी नही की थी।

विजय सिंह
रुद्रपुर, उत्तराखंड

अब बात, वर्ष 1944 की... 1939 में शुरू हुए द्वितीय विश्वयुद्ध को लगभग 5 वर्ष हो चुके थे। धुरी राष्ट्र के देश... जर्मनी, इटली और जापान की सेनाएं, मित्र राष्ट्र के देश... ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, रूस और कुछ हद तक चीन की सेनाओं पर भारी पड़ती दिखाई दे रहीं थीं। एशिया में तो जापान की सेना, अपना विजय पताका फहराते हुए, लगातार तेजी से दक्षिण की ओर बढ़ती आ रही थी। ब्रिटिश सेना को पराजित कर, बर्मा (आज का म्यांमार) में उसने अपना प्रभुत्व जमा लिया था। अब जापान का अगला लक्ष्य था। भारत के कोहिमा, इंफाल व नागाहिल्स की पहाड़ियों पर कब्जा जमाने की। इस इलाके को "पूरब का स्टालिनगार्द" कहा जाता था, जहां पर कब्जा जमाने का अपना अलग ही सामरिक महत्व था। जापानी सेना को लीड करने वाले जनरल रेन्या मुताकुशी का प्लान था कि, जापान की तीन टुकड़ियों में से दो टुकड़ियां इंफाल के मैदान में ब्रिटिश सेना को घेर कर मारेगी, जबकि तीसरी टुकड़ी दिगापुर रेल टर्मिनल और वहां के सड़क मार्ग पर कब्जा करेगी, जिससे कोहिमा स्थित ब्रिटिश सेना का रसद मार्ग बंद हो जाए। योजनानुसार भारी सेना बल के साथ 4 अप्रैल 1944 को जापानी सेना ने इंफाल पर हमला बोल दिया। कहा जाता है कि जापानी सेना में सुभाष चंद्र बोस के आजाद हिंद फौज के लगभग 10 हजार सैनिक थे। ब्रिटेन को बिलकुल भी आभास नहीं था कि खूंखार जानवरों व मच्छरों से भरे घने जंगल, नदी, नाले पार कर जापान की सेना उन पर यहां हमला भी कर सकती है। आनन फानन में कोहिमा इंफाल की रक्षार्थ, कैप्टन रॉबिन रोलैंड के नेतृत्व में लगभग 15 हजार ब्रिटिश सैनिक, जिनमें अंग्रेज सैनिक के अतिरिक्त, ज्यादातर भारत के हिंदू, सिख और मुसलमान सैनिक थे, तोप गोले और रसद के साथ कोहिमा के लिए रवाना कर दिए गए। इस दौरान जापानी सेना इंफाल और कोहिमा के मैदानी इलाके में तबाही मचाते हुए गैरीसन पहाड़ी की ओर बढ़ चली थी। यहां पहुंचकर एक ऐसी स्थिति भी सामने आई, जब हवाई हमलों, तोपों व बंदूकों से लड़ते लड़ाते अब दोनों सेनाओं के बीच आमने सामने का गुत्थम-गुत्था युद्ध शुरू हो गया। जापानी सेना के मुकाबले, मात्रा में काफी कम होने के बावजूद, ब्रिटिश सेना भौगोलिक लाभ की स्थिति के चलते, जापानी सेना पर भारी पड़ रही थी। यहां लंबे समय तक जूझने के बाद, जापानी सेना के पांव उखड़ने लगे। उनके पास की रसद खत्म हो चली थी, उनके सैनिकों को हैजा, टायफायड, कालरा, मलेरिया आदि गंभीर बीमारियों से जूझना पड़ रहा था, इन बीमारियों के चलते हजारों सैनिक अपनी जान गवां बैठे थे। अंतोतगत्वा 22 जून 1944 को जापानी सेना को हार स्वीकार कर, यहां से वापस जाना पड़ा। यह जापान के लिए एक ऐसा सदमा था, जिससे उसके सैनिकों के मनोबल पर विपरीत और काफी बुरा प्रभाव पड़ा था। आगे की विश्वयुद्ध की लड़ाई में उनका एशिया फतह का अभियान थम सा गया। आंकलन बताते हैं कि इस युद्ध में जापानी सेना के लगभग 53 हजार सैनिक मारे गए थे, जिनमें 2 हजार सैनिक आजाद हिन्द फौज के थे। ब्रिटेन और मित्र देशों के भी लगभग 12 हजार सैनिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी। इतिहासकारों की नजरों में द्वितीय विश्वयुद्ध का, यही एकमात्र ऐसी लड़ाई थी, जिसमें दोनों तरफ से भारतीय लड़ रहे थे।

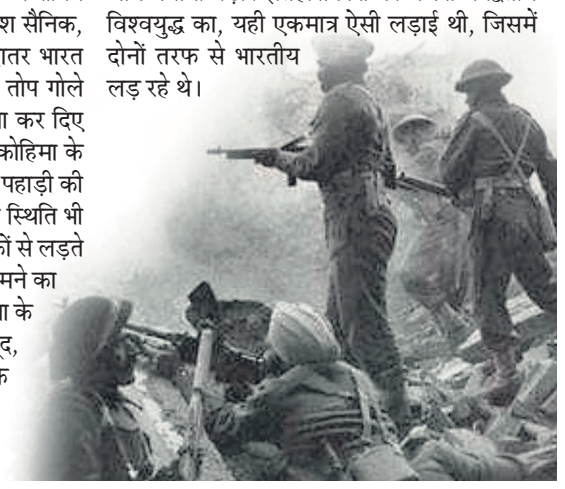

ब्रिटिश सेना की छावनी हुआ करती थी गैरीसन हिल

अब कुछ बातें गैरीसन हिल की.. वर्ष 1944 की सामरिक महत्व की यह पहाड़ी, जहां ब्रिटिश सेना की छावनी हुआ करती थी, आज कोहिमा-इंफाल युद्ध के शहीदों की कब्रिस्तान, समाधि और संग्रहालय में तब्दील हो चुकी है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर नागालैंड की यात्रा पर जाने वाले

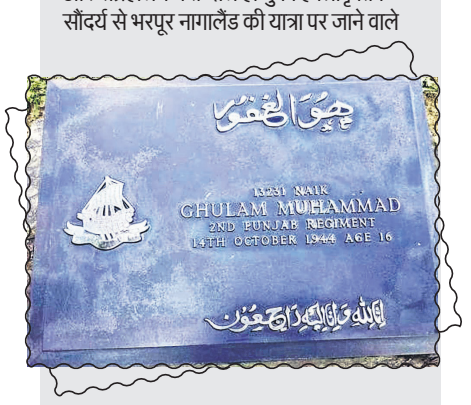

देशी विदेशी, और विशेषत: ब्रिटेन के नागरिक, नागालैंड की राजधानी कोहिमा ना जाएं, भला यह कैसे हो सकता है। और जब यहां पहुंच ही गए, फिर शहर के बीचोबीच स्थित गैरीसन पहाड़ी न देखने जाएं, यह भी संभव नही। हरी भरी फूलों की क्यारियों के बीच से आप जैसे जैसे इस पहाड़ी पर ऊपर की ओर चढ़ते जाएंगे, सीढ़ीनुमा स्थानों पर पंक्तिबद्ध ब्रिटिश और भारतीय मुस्लिम सैनिकों की कब्रें, हिंदू और सिख सैनिकों की समाधियां और शिलालेख से आप रूबरू होते जायेंगे। मात्र 16-17 वर्ष के युवा सैनिकों की कब्रें, समाधियां देखकर, आपका मन द्रवित हो उठेगा। यह वही जगह है, जहां पर जाने के लिए आपको ब्रिटिश कॉमनवेल्थ वॉर ग्रेब्स कमीशन से अनुमति लेनी पड़ती है। इस हिल की पूरी व्यवस्था, रखरखाव की जिम्मेदारी इन्हीं के सुपुर्द है। यहां पर आपको एक ऐसा शिलालेख भी देखने को मिलेगा, जिस पर लिखा है.. "जब आप घर जाओ, उन्हें हमारे बारे में बताना... उनके कल के लिए, हमने अपना आज दिया है"। यह संदेश शहीद हुए ब्रिटिश सैनिकों की ओर से, उनके अपने वतन और परिवार के लोगों के लिए, लिखा गया है, जो प्रत्येक वर्ष अपने स्वजनों के कब्र पर फूल चढ़ाने आते हैं।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

बदायूं (इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति)

परियों का कुआं- बदायूं नगर के समीप परियों का कुआं दूर-दूर तक विख्यात है। इसके बारे मे प्रसिद्ध है कि जब सम्राट अकबर अपनी पत्नी जोधाबाई के साथ छोटे सरकार की जियारत पर आए थे तब जोधाबाई ने सफेद कपड़े पहने कुछ स्त्रियों को इस कुए पर स्नान करते हुए देखा था। उन स्त्रियों के बारे में प्रसिद्ध है कि वह परियां थीं। अकबर की रानियों ने भी उस कुएं पर स्नान किया। इसके बारे में मान्यता है कि इसके जल से स्नान करने पर स्त्रियों को संतान की प्राप्त अवश्य होती है। संतान प्राप्ति की इच्छुक स्त्रियां लगातार छः बुद्धबार को यहां आकर स्नान करती हैं।

किला बदायूं-बदायूं शहर का यह क्षेत्र पुरातन काल में एक शानदार किला था। जनश्रुतियों में इसे महिपाल का किला कहते हैं लेकिन यह और अधिक प्राचीन था जिसका कई बार जीणोद्धार हुआ। वर्तमान कोतवाली रोड किले की पूर्वी दीवार थी उसी में मण्डन द्वार था जिसे मई दरवाजा कहते हैं। उत्तर की तरफ भरतद्वार जो भरतौल दरवाजा कहलाता है। दक्षिण की तरफ सोत दार था। मौजूदा में भरतौल दरवाजे एवं सोत दरवाजे के पास पुलिस चौकी है। वह किले की बुर्जी पर है। स्रोत दरवाजे के सामने दूसरी बुर्जी के अवशेष अब तक मौजूद है जिनमें कुछ कब्रें बनी हैं।

उझानी- इस शहर का पुराना नाम पपरिया था। पहले यहां पीपल के पेड़ बहुत थे। गजेटियर के अनुसार इसकी स्थापना राजा धर्मपाल ने की थी तथा इसको उझानी नाम दिया था। रुहेलों के समय में इसकी विशेष उन्नति हुई जब रुहेला नवाब अब्दुला खां ने अपनी रियासत की राजधानी इस शहर को बनाया था। उनका राज्य उझानी, सहसवान एवं सादातपुर क्षेत्र तक था तथा उनका शासन 1752 ई. से 1767 ई. तक यहां पर रहा। उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटे नसरुल्ला खां यहां के नवाब सन 1774 ई. तक रहे। सन् 1774 ई. में नवाब अवध ने रुहेलखण्ड पर आक्रमण किया जिसमें रुहेले पराजित हो गए तथा उझानी पर भी नवाब अवध का अधिकार हो गया। सन 1801 में अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कं. ने रुहेलखण्ड नवाब अवध से छीन लिया तब से स्वतंत्रता प्राप्ति तक उझानी अंग्रेजों के अधीन रहा।

उझानी में नवाब अब्दुल्ला खां का पक्का मकबरा मेन बाज़ार में बना हुआ है। उझानी को उझियानी भी बोला एवं लिखा जाता है। इस समय उझानी बदायूं जिले का सबसे बड़ा औद्योगिक शहर है।

बिसौली- जनश्रुति के अनुसार बिसौली का पहले नाम बांसवाड़ी या बिसोड बाड़ी था। यहां बांस के पेड़ बहुत थे। सन् 1752 में दून्दे खां रुहेला ने बिसौली पर शासन प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने पूरे राज्य (रियासत) की राजधानी बिसौली को बनाया। उनके राज्य में इस समय मुरादाबाद, बिजनौर तथा काशीपुर तक का क्षेत्र था। उनके समय में यहां किला, मस्जिद सराय, जनान खाना, मर्दान खाना बनवाया गया। सन् 1770 में नवाब दून्दे खां की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद उनका राज्य उनके तीन बेटों में विभाजित हो गया। बिसौली पर रुहेलों का 1774 ई. तक शासन रहा। उसके पश्चात नवाब अवध एवं फिर आजादी प्राप्त होने तक अंग्रेज़ों की हुकुमत रही। बिसौली से आसफपुर की सड़क के पास पुराने मिटट्टी के किले के अवशेष शेष हैं। गल्ती से इसे दून्दे खां का किला कह दिया जाता है लेकिन यह बहुत पुराना किला रहा होगा। या तो यह मुसलमानों के आने से पूर्व का है या फीरोज शाह न्वादशाह के समय का होगा। अब केवल एक मोटी मिट्टी की दीवार शेष है जिसके ऊपर रोशन सय्यद साहब का मज़ार बना हुआ है। बिसौली की सबसे ज्यादा रुहेलों की हुकूमत के काल में उन्नति हुई।

बिल्सी

ऐसा कहा जाता है कि जसराम वैश्य ने बिलासो वगैरह जमींदार की इजाज़त से नवाब अवध की हुकूमत काल में इसको बसाया था। अंग्रेजों के समय में मिस्टर डेनविम ने इसको व्यापारिक मण्डी बनाया। यहां पर चारों ओर नील उत्पादन के लिए नील की कोठियां बनाई गई तथा यह नील उत्पादन का प्रमुख केन्द्र बन गया।

सिल पर परत निसान

पत्थर की परीक्षा की अपनी विधियां रही हैं। वह किस जाति-वर्ण का है? लिंगानुसार किस कोटि का है और स्वर के अनुसार किस भेद वाला है, इस पर हमारे शिल्प शास्त्रों में अनेक बार विचार हुआ है। विशेषकर मूर्तिकला और मंदिर स्थापत्य के प्रसंग में। चूंकि घर के लिए पाषाण का प्रयोग नहीं होता था, ऐसे में उन ग्रंथों में पाषाण पर विमर्श नहीं होता। रत्नों में स्फटिक शिला को उपयोगी माना गया तो अगस्त्य और बुद्ध भट्ट आदि ने रत्न शास्त्र में उसकी परीक्षा की विधियां लिखीं।

डॉ.श्रीकृष्ण "जुगनू"
लेखक

दक्षिण में जहां गुफाएं (लेणी) बनीं, वे शिल्प में आमूर्तन की पहल थीं और उनके शिल्पकारों ने पूरब की असोक कालीन लोमस ऋषि की गुफा वाली शिला-तकनीक को अपनाया। हमारा मानना है कि यह तकनीक उससे पहले लगभग एक हजार बरस से शिल्पी जानते थे। यानी कोई 22 पीढ़ियों ने गुफा निर्माण का काम किया। पीढ़ी दर पीढ़ी इस तकनीक का हस्तांतरण होता रहा लेकिन किसी अन्य को नहीं बताया। अपनी बहन तक को नहीं।

गुफा को प्रस्तरगृह (सिलागेह) कहा जाता था और उसको दिशा सम्मत खुदाई करके बनाया जाता था। अयस के टांकु और इष्टला (हथौड़ा) जैसे औजार। स्तर और सीध देखने के लिए कम्बी और सूत-हावल। सुबह से अपराह्न तक काम होता। सुबह की किरणें अच्छी तरह द्वार और आगे तक रोशनी रखती थीं और इस तरह वास्तु में दिशा शोधन का नियम रूढ़ हो गया। (अजंता, आलोर की लेनी में प्रकाश व्यवस्था) विशेषकर, पहले पहल सूर्य आयतनों के द्वार के लिए उसको अपनाया गया। आयतन (देवायतन) शब्द भी इससे ही चलन में आयाः सीधी रोशनी और उसके दाएं बाएं का क्षेत्र। अपनी "वास्तु और शिला चयन" में इसके विषय में

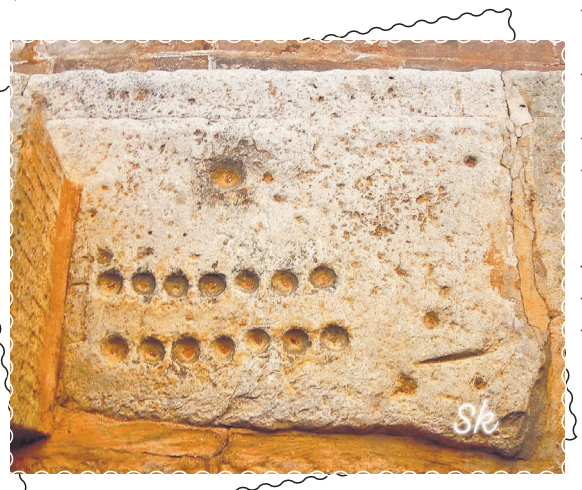

हमने खूब विमर्श किया है।

शिला को काटना और भेदना ये दो कार्य थे। शिला को काटा तब जाता जबकि कहीं अन्यत्र ले जाना होता और भेदना तब होता जब गुफा जैसी रचना करनी होती। इसकी बाकायदा परीक्षा होती। उसके लिए चिह्न लगाए जाते। ये धातु के औजार आदि में भी काम लिए जाते। जैसेः अंग, भूमि, नेत्र, अरिष्ट, दिव्य, भौम... कुल मिलाकर 200 लक्ष्म होंगे। यही नहीं, प्राकृतिक चिह्न भी होते जिनके भेद 30 के पार थे उनके आधार पर शिलाओं की शुभ-अशुभता और निमित्त आदि का अनुमान किया जाता। रोचक नाम थे और सब के सब जलचर, भूचर और खेचर प्राणी, पेड़ पौधों पर होते। कई बार ऋजु या तिरछे भी रखे जाते। पत्थर के सिर और पांव, दाएं और बाएं की पहचान के लिए चिह्न किया जाता। ये बिन्दु (वृत्त) आयत (चौकड़ी), त्रिकोण (पर्वत) आदि के रूप में होते...। कहा जाता :

सिल सत मात, सिल सत रसि।
सिल एक खंड, सिल सत अंग।
सिल दो रूप, सिल मिसर जात।
सिल त्रिण नेत, सिल चतुरा...!

कभी शिलाओं को इस तरह भी देखा है? कैसे ये शिलाएं घी जैसी मुलायम होती? कैसे उनको अखंड रखा जाता? पूजन के बाद उनको स्थिर रूप कर दिया जाता, लेकिन कैसे? यह कोई चमत्कार या देवकृपा नहीं थी, तकनीक थी और आज भी उसका कोई सानी नहीं। संसारभर से इस विषय पर अनेक सवाल आते हैं।

विरान पड़ी डनलप टायर फैक्ट्री

हुगली के साहागंज स्थित डनलप टायर फैक्ट्री, आज वीरान पड़ी हुई है। यह फैक्ट्री 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध में वायुसेना के लड़ाकू विमानों के लिए टायर दिया था। साल 1999 के कारगिल युद्ध में भी सेना ने इसी डनलप से टायर लिया था। साल 2025 के युद्ध की परिस्थिति में अब वह डनलप फैक्ट्री नहीं रही। डनलप फैक्ट्री वर्ष 1998 में छाबड़िया समूह के हाथों में थी, तभी इसका उत्पादन ठप हो गया था लेकिन 1999 में जब कारगिल में युद्ध छिड़ा, डनलप के स्टॉक में अब भी सेना के काम आने वाले 'एरो टायर' और 'ओटी एवं ओफ दा टायर मौजूद थे। एरो टायर वायुसेना के लड़ाकू विमानों में तथा ओटीआर टायर टैंक और बोफोर्स तोपों के लिए उपयोगी होते थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तत्कालीन रक्षामंत्री जॉर्ज फर्नांडिस को आदेश दिया कि डनलप से आवश्यक टायर लेकर सेना को दिया जाए। फैक्ट्री भले बंद थी, लेकिन उसके भीतर मौजूद टायर युद्ध में देश के लिए काम आए थे।

उस समय एरो टायर बनाने वाले श्रमिक मधु शर्मा ने बताया, कारखाना बंद था, हमारी हालत खराब थी। शुरुआत में श्रमिक तैयार नहीं थे, लेकिन राज्य के तत्कालीन वित्त मंत्री असीम दासगुप्ता ने समझाया था कि देश पहले है। हमने गेट खोला और वायुसेना के जवान ट्रकों में भरकर टायर ले गए। हमें गर्व हुआ कि सीधे युद्ध में शामिल नहीं हुए, लेकिन हमारी मेहनत युद्ध का हिस्सा बनी। श्रमिक असीम कुमार बसु भी कहते हैं, हमने देशहित को पहले देखा। बिना वेतन, संघर्ष के बीच भी हमने देश के लिए टायर दिए। न सिर्फ वायुसेना के लिए, बल्कि नौसेना के जहाजों में लगने वाले वी बेल्ट भी डनलप से ही जाते थे। वह भी दिया लेकिन अब वही डनलप कारखाना वीरान है। फैक्ट्री की जमीन पड़ी है, इमारतें जर्जर हो चुकी हैं। कोई भी सरकार डनलप को फिर से खड़ा करने के लिए आगे नहीं आ रही है। देश और युद्ध के दौरान जिसने योगदान दिया वह आज अंधकार नगरी बना हुआ है।

-निरंजन सिंह

जोसेफ़ स्टालिन की लड़की स्वेतलाना जब भारत आई

"जब स्टालिन की लड़की अस्थि विसर्जन के लिए प्रतापगढ़ आई और वहां से सीआईए की मदद से अमेरिका उड़ गई" 1963 में एक महिला मॉस्को के कुंत्सेव हॉस्पिटल में अपने गले का टॉन्सिल निकलवाने आती है। वह महिला महात्मा गांधी की जीवनी पढ़ रही थी और उसे एक ऐसे भारतीय व्यक्ति की तलाश थी जो उसे महात्मा गांधी के बारे में और भी ज़्यादा विस्तार से बता सके। संयोग से उस महिला की मुलाकात वहां पर एक भारतीय कम्युनिस्ट से होती है। वह व्यक्ति वहां पर सांस और फेफड़ों की बीमारी का इलाज कराने आया था। थोड़ी देर तक हॉस्पिटल के कॉरिडोर में टहलने के पश्चात दोनों एक सोफे पर बैठ जाते हैं और उनके बीच एक लंबी बातचीत होती है। कुछ दिनों बाद, काला सागर के किनारे, रूस के एक शहर सोची में दोनों स्वास्थ्य-लाभ ले रहे थे। इसी बीच दोनों में नज़दीकियां और रोमासं-प्यार बढ़ता है। लेकिन अधिकृत रूप से उन्हें शादी करने की अनुमति नहीं मिलती।

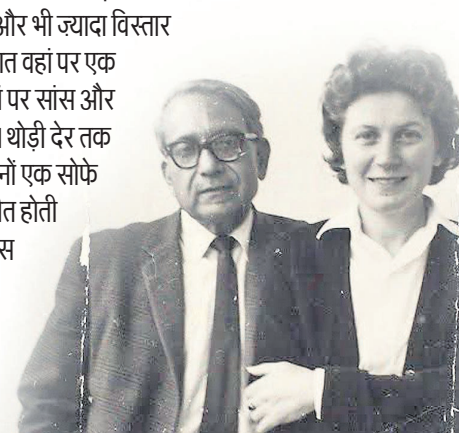

इसी बीच वीज़ा नियमानुसार उस व्यक्ति को इलाज के बाद भारत वापस लौटना पड़ता है। लौटते हुए उस व्यक्ति ने उस महिला से वादा किया कि मैं जल्दी ही रूसी ग्रंथों को हिंदी में अनुवाद करने हेतु मॉस्को वापस आऊंगा। हम फिर शादी करेंगे। वह 1965 में रूस वापस आता है। लेकिन शायद बीमारी कहीं बची रह गई थी। एक दिन उस व्यक्ति ने सपना देखा कि एक सफ़ेद बैल एक गाड़ी खींच रहा है।

प्रशांत द्विवेदी
सहायक आयुक्त, जीएसटी कानपुर

उस व्यक्ति ने अपनी प्रेमिका को बताया कि भारत में इसे अशुभ माना जाता है और इसे मौत का संदेश माना जाता है। वह व्यक्ति बुदबुदाया, 'स्वेता अब मैं जीवित नहीं रहूंगा।' अगले ही दिन उस व्यक्ति का निधन हो जाता है। वहीं सोची में ही उसका अंतिम संस्कार कर दिया जाता है। उसकी प्रेमिका ने उससे वायदा किया था कि वह उसकी अस्थियां गंगा में प्रवाहित करेगी।

उस व्यक्ति की प्रेमिका अस्थियां लेकर गंगा में प्रवाहित करने भारत आती है, और उस व्यक्ति के पुश्तैनी गांव, उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़, गंगा किनारे स्थित कालाकांकर जाती है।

वह महिला थी, रूस के तानाशाह जोसेफ़ स्टालिन की लड़की स्वेतलाना अलीलुयेवा-स्टालिन के तीन बच्चों में सबसे छोटी और वह भारतीय था। प्रतापगढ़, गंगा किनारे स्थित कालाकांकर रियासत के कुंवर ब्रजेश सिंह थे। वही ब्रजेश सिंह जिनके भतीजे दिनेश सिंह विदेश राज्य मंत्री और इंदिरा जी के बेहद चहेते एवं करीबी थे।

ख़ैर, रूस वापस लौटने के बजाय वह महिला सोवियत दूतावास से भारत में ही रहने की परमिशन मांगती है, लेकिन उसे परमिशन नहीं मिलती। इससे परेशान होकर वह चुपके से और अचानक से दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास जाती है और वहां पर शरण मांगती है। भारत स्थित अमेरिकी दूतावास में असिस्टेंट अम्बेस्डर रिचर्ड सेलेस्टे के पास सीआईए के इंडिया हेड डेविड ब्ली का फोन आता है और और वे उन्हें तुरंत एम्बेसी पहुंचने को कहते हैं। उस समय जब भारत में रात के नौ और अमेरिका में सुबह के 11 बज रहे थे, भारत में नियुक्त तत्कालीन अमेरिकी राजदूत चेस्टर बी. बोल्स वाशिंगटन को रिपोर्ट करते है, "मेरे दूतावास में एक महिला आई है जो कि खुद को स्टालिन की बेटी बता रही है। और मुझे लगता है कि वह सच कह रही है। मैं उसे रात के 1 बजे विमान से रोम भेज रहा हूं, जहां पर हम उसे रोक कर आगे की कार्यवाही पर विचार करेंगे। मैंने उसे अमेरिका में शरण देने का कोई वादा तो नहीं किया है, बल्कि अभी उसे बस भारत से निकाल रहा हूं। अगर आपको इस पर आपत्ति हो तो मुझे मध्यरात्रि के पहले सूचित कर दें।" वाशिंगटन से कोई जवाब नहीं आया।

भारत में नियुक्त तत्कालीन अमेरिकी राजदूत चेस्टर बोल्स उस महिला की रिक्वेस्ट स्वीकार कर लेते हैं। सीआईए के इंडिया हेड डेविड ब्ली उस महिला को पालम छोड़ने ले जाते हैं, और रसियन भाषा बोलने वाले एक सीआईए एजेंट को पहले ही उस विमान में चढ़ा दिया जाता है। इस निर्देश के साथ कि रसियन ख़ुफ़िया एजेंसी केजीबी कोई और प्लॉट न कर सके और स्वेतलाना विमान से निकल न भागे या आगे कोई और परेशानी न हो।

इस बीच डेविड ब्ली सीआईए हेडक्वार्टर लैंगली से जुड़ गए और पल-पल का अपडेट लेने-देने लगे। उन दिनों शीत युद्ध चरम पर था। दो-ध्रुवीय विश्व में इस घटना ने हलचल मचा दिया। दुश्मन देश के डिक्टेटर की बेटी अपना देश-अपने पिता को छोड़कर अमेरिका में शरण ले, अमेरिका के लिए इससे बड़ी कूटनीतिक सफलता और क्या होगी? नेक्स्ट डे रूसी दूतावास में हड़कंप मच गया। दिल्ली स्थित केजीबी के इंडिया हेड ने डेविड ब्ली को हॉटलाइन पर कॉल किया और चिल्लाकर पूछा तुमने स्टालिन की बेटी का अपहरण क्यों किया? ब्ली का शांतिपूर्ण उत्तर था कि हम किसी को किडनैप नहीं करते। लोग हमारे पास अपनी इच्छा से आते हैं। उसने खुद आकर मेरे यहां शरण की मांग की थी। अमेरिका और रूस में टेंसन और बढ़ गया और पूरी दुनिया के देशों में यूएस-रसिया के डिप्लोमेट्स के बीच होने वाली हर बात-मुलाक़ात रद कर दी गई। और अब क्योंकि सोवियत गवर्नमेंट भारत की आलोचना कर सकती थी इसलिए उसे सीधे तौर पर अमेरिका में पोलिटिकल असाइलम् न देकर पहले रोम भेजा जाता है और वहां से स्विट्ज़रलैंड। थोड़े दिनों बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी स्वेतलाना के पास भारतीय दूत भेजती हैं, जिसका उद्देश्य यह था कि स्वेतलाना यह बोल दे उनके भारत से भागने में किसी भी भारतीय ने उनकी मदद नहीं की।

हालांकि, सोवियत गवर्नमेंट ने स्वेतलाना के अमेरिका जाने के लिए भारत को जिम्मेदार बताया, यह कहकर कि भारत ने अपने एक ख़ास मेहमान का ठीक से ख़याल नहीं रखा। इसके कुछ दिनों बाद ही स्वेतलाना न्यूयॉर्क पहुंचती है और प्रेस कॉन्फ्रेंस करके अपने पिता स्टालिन की लिगेसी और सोवियत यूनियन को हमेशा के लिए त्याग देने की घोषणा करती है। गरीबी, क़र्ज़ और फेल्ड इंवेस्टमेंट्स में जीते हुए, सोवियत के डिक्टेटर की लड़की स्वेतलाना, और उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ स्थित कालाकांकर रियासत की बहू, कुंवर ब्रजेश सिंह की पत्नी स्वेतलाना अलीलुयेवा अमेरिका के विस्कॉन्सिन में गुमनामी में जीते हुए 22 नवंबर 2011 के दिन दम तोड़ देती हैं।